ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अप्रैल-२०२२

अप्रैल-२०२२ ◆ वर्ष १० ◆ अंक १२ ◆ उदयपुर

श्री राम का पावन जीवन
लाखों कवियों ने गाया
उनका उज्ज्वल यश प्रवाह
अब तक भी चलता आया
करो अनुकरण तुम चरित्र का
ऋषिवर ने यह सिखलाया।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १५ १२६

मसालों का शहंशाह
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer
PEACOCK
KASOORI METHI
Achari Aloo masala
Veg Biryani masala
Karahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
CHILLI POWDER
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२२
चैत्र शुक्ल षष्ठी
विक्रम संवत्
२०७९
दयानन्दाब्द
१९८

April - 2022

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

०८

१४

०४	वेद सुधा
०७	सत्यार्थ मित्र बनें
११	गर्भाधान संस्कार
१३	सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०१/२२
१८	धर्म और साम्प्रदायिकता
२१	स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती
२३	आर्य समाज हिन्दू विरोधी नहीं
२५	बाजीराव पेशवा
३०	वेद ज्ञान की आवश्यकता

समाचार २८

हलचल २९

स्वामी: श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० अंक - १२

मुद्रण: द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001

(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159

www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

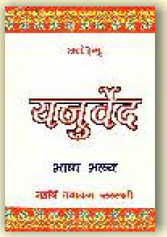

वेद सुधा

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।6।। - यजुर्वेद ३२/१०

अर्थ- हे मनुष्यो! (सः) वह परमात्मा (नः) अपने लोगों का (बन्धुः) भ्राता के समान सुखदायक (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक (सः) वह (विधाता) सब कामों का पूर्ण करने हारा (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोकमात्र और (धामानि) नाम,स्थान, जन्मों को (वेद) जानता है और (यत्र) जिस (तृतीये) सांसारिक सुख-दुःख से रहित, नित्यानन्दयुक्त (धामन्) मोक्षस्वरूप, धारण करने हारे परमात्मा में (अमृतम्) मोक्ष को (आनशानः) प्राप्त होके (देवाः) विद्वान् लोग (अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।।६।।

हे मनुष्यों! इस सम्बोधन से सब मनुष्यों को दृढ़ निश्चय से यह जानना चाहिए कि वह परमात्मा जो नाश, स्थूल, सूक्ष्म, लघु, लोहित=लाल, चिक्कन, छाया, अन्धकार, वायु, आकाश, संग,शब्द, स्पर्श,गन्ध, रस, नेत्र, कर्ण, वाणी, मन, तेज, प्राण, मुख, नाम, गोत्र वृद्धावस्था, मरण, भय, आकार, विकास, संकोच, पूर्व, अपर, भीतर, बाह्य अर्थात् बाहर इन सब दोष और गुणों से रहित मोक्षस्वरूप है। वह साकार पदार्थ के समान किसी को प्राप्त नहीं होता और न कोई उसको मूर्तद्रव्य के समान प्राप्त होता है, क्योंकि वह सब में परिपूर्ण सबसे अलग अद्भुत स्वरूप परमेश्वर है, वह हमारा बन्धु अर्थात् दुःख का नाश करनेवाला है।

सब सुखों का उत्पन्न करने वाला है। भ्राता के समान सुखदायक का अभिप्राय यह है कि ईश्वर ने मनुष्यों में जितना सामर्थ्य रखा है, उतना पुरुषार्थ अवश्य करें। उसके उपरांत ही ईश्वर से सहाय की इच्छा करनी चाहिए। मनुष्यों में सामर्थ्य रखने का ईश्वर का अभिप्राय या प्रयोजन यही है कि मनुष्यों को अपने पुरुषार्थ से ही सत्य का आचरण अवश्य करना चाहिए। जैसे कोई मनुष्य आंख वाले को ही किसी वस्तु को दिखला सकता है, अन्धे को नहीं। इसी रीति से जो मनुष्य सत्यभाव पुरुषार्थ से धर्म को किया चाहता है, उस पर ही ईश्वर भ्राता या बन्धु के समान कृपा कर सुख देता है, अन्य पर नहीं। धर्म करने के लिए बुद्धि आदि साधन ईश्वर ने जीव के साथ रखे हैं, उनसे जीव जब पूर्ण पुरुषार्थ करता है, तभी सुख प्राप्त होते हैं। ईश्वर अपने सब सामर्थ्य से भाई के तुल्य मान्य सहायक होकर कृपा करता है। श्रम जो परम प्रयत्न का करना और तप जो धर्म का अनुष्ठान करना है, इसी धर्म से युक्त मनुष्यों को रचा है। इसी कारण से ब्रह्म जो वेदविद्या और परमेश्वर के ज्ञान से युक्त होके पृथिवी तृण से लेकर परमेश्वर पर्यन्त अपने ज्ञान को बढ़ायें। उसी ज्ञान से परमेश्वर को प्राप्त होके सबके आत्मरूप परमेश्वर की उपासना करते हुए उसी के आश्रय में रहते हैं।

इसी कारण से अर्थात् उसके आश्रय से उस जीव का आना-जाना सब लोक-लोकान्तरों में होता है, कहीं रुकावट नहीं रहती और उनके सब काम पूर्ण हो जाते हैं; कोई काम अपूर्ण नहीं रहता। योगरीति से जो मनुष्य परमेश्वर को सबका आत्मा जानकर उसकी उपासना करता है, वह अपनी सम्पूर्ण कामनाओं को प्राप्त होता है और सब लोकों को प्राप्त करता है। जितने भी शुक्ल=श्वेत, नील, पिंगल (पीलाश्वेत) हरित=हरा और लोहित=लाल-ये सब गुणवाले लोक-लोकान्तर हैं, ज्ञान से प्रकाशित होते हैं। वह सब भुवनों को जानता है और उसके आश्रय से जीव को भी यह ज्ञान होता है।'

'वह नाम स्थान जन्मों को जानता है'

वह परमात्मा अनादि है, उसका ज्ञान भी अनादि है। उसमें भूत-भविष्यत् नहीं होते। परमेश्वर का ज्ञान सदा एकरस अखण्डित वर्तमान रहता है। जैसे ईश्वर के सर्वज्ञ ज्ञान में जीव के कर्म होते हैं; वैसे ही उन जीवों के कर्मानुसार जन्म होते हैं- जन्म होते हैं तो उन जन्मों में उन जीवों के स्थान और नाम भी जानता है। जब ईश्वर जानता है तो उसकी उपासना से जीव के गुण-कर्म-स्वभाव भी ईश्वर के गुण जैसे हो जाते हैं। तद्नुसार धारणा+ध्यान+समाधि इन तीनों के एकत्र रूप संयम को अर्थात् संस्कारों में संयम करने से उस योगी को पूर्वजाति ज्ञान हो जाता है। इतना ही नहीं, दूसरे पुरुषों के संस्कार साक्षात् करने से भी उसके नाम-स्थान-जन्मों को जान लेता है। इस प्रकार वह परमात्मा सब कामों का पूर्ण करने वाला अर्थात् सब पदार्थों और कर्मफलों का विधान करने वाला या सब कामों की सिद्धि करने वाला है।

और जिस सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्दयुक्त मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं।'

इस मंत्र में तृतीये धामन्, अमृतं-आनशानः देवाः अध्यैरयन्त प्रयुक्त शब्दों के ऋषि अर्थों पर विचार करते हैं।

सर्वप्रथम हम 'तृतीये धामन्,' मन्त्रगतशब्दों पर विचार करते हैं। यह तृतीये धामन् क्या है? सामान्य अर्थ है- तीसरा धाम=स्थान। तृतीय-यह क्या है? इसके अर्थ क्या हैं? इसके अर्थ हैं-एक जीव और प्रकृति से विलक्षण या एक स्थूल जगत् पृथिव्यादि, दूसरा सूक्ष्म आदिकारण अर्थात् जीव और प्रकृति तथा एक स्थूल जगत् पृथिव्यादि और दूसरा सूक्ष्म जगत्-ये दो हुए। इन दोनों से पृथक् तीसरा सर्वदोष रहित अनन्तानन्द स्वरूप परब्रह्म या शुद्ध तत्व सहित होके सर्वोत्तम सुख है।

अविद्या आवरण और अल्पज्ञत्वादि दोष युक्त बार-बार जन्म-मरण के चक्र में फंसकर सांसारिक सुख-दुःखसागर में डूबा हुआ जीव और समस्त जड़ जगत् के अनादि नित्य कारण सत्व रजस्तमोगुणमय प्रकृति है, इन दोनों से विलक्षण अर्थात् इन दोनों का एक भी लक्षण नहीं है जिसमें, इन सबसे पृथक् तृतीय है। वही सर्वदोषरहित अनन्तानन्दस्वरूप परब्रह्म मोक्षधाम को ही तृतीय धाम कहते हैं और वह ब्रह्मलोक ही है।

प्रभु की उपासना से क्लेश के मूल के उच्छिन्न हो जाने से जिनका पुण्य-पाप कर्माशय दग्धक्लेश बीज होने के कारण फल देना प्रारम्भ नहीं करते; अविद्यादि से ढका हुआ कर्माशय ही कर्मफल को अंकुरित करने वाला होता है। क्योंकि विवेकख्याति से कर्माशय दग्धबीज नहीं हुआ है। जैसे जो तुष=भुसी से ढके हुए हैं और जो जले हुए नहीं हैं, वे चावल अंकुरित होने में समर्थ होते हैं। किन्तु जो तुष=भूसी से रहित और जले हुए चावल के बीज हैं, वे उगने में समर्थ नहीं होते; उसी प्रकार अविद्यादि क्लेशों से ढका हुआ नहीं है जिनका कर्माशय, ऐसे वे दग्धबीज विद्वान् लोग सांसारिक सुख-दुःख से रहित=सर्वदोषरहित, क्योंकि सांसारिक सुख-दुःख दोनों ही अनित्य हैं, इस अनित्य सुख-दुःख से पृथक् जो नित्य आनन्द है, अर्थात् आनन्दस्वरूप=मोक्षस्वरूप को धारण करने हारा जो धाम=अर्थात् दुःखरहित स्थान अर्थात् जो देश,काल, वस्तु परिच्छेदरहित सर्वगत आधाररूप परमात्मा है, उसमें सब बाधाओं से छूटकर विज्ञानवान् होके मोक्ष को प्राप्त होके विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक=अव्याहतगति से विचरते हैं। ब्रह्मलोक में इस आधाररूप सर्वगत परमात्मा के आश्रय सब लोक, सब काम पूर्ण हो जाते हैं, वहीं पर इन विद्वानों का आना जाना भी सब लोक लोकान्तरों में भी स्वेच्छा से होता है। यह तृतीय धाम वह सर्वोत्तम सुख है जो शुद्ध सत्व से सहित है, जिसमें विद्वान् लोग स्वच्छन्दता से रमण करते हैं।

प्रश्न-शुद्ध सत्व क्या चीज है?

उत्तर- यह बहुत गंभीर प्रश्न है,जिसको उतनी ही गंभीरता से विचार करना पड़ेगा। देखिए- प्रकृति के तीन गुण सब संसारस्थ पदार्थों में व्याप्त रहते हैं। जो गुण जीवों के देह में अधिकता से वर्तता है, वह गुण उस जीव को अपने सदृश कर लेता है और जीव इन्हीं गुणों के आधीन किए गए कर्मों से भिन्न भिन्न गतियों को प्राप्त होता है। इन सत्व,रजः और तमोगुणों का उत्तम मध्यम और निकृष्ट फलोदय होता है। परन्तु जब जीव मुक्त होते हैं, वे गुणातीत अर्थात् सब गुणों के स्वभावों में न फँसकर

महायोगी होते हैं। रजोगुण-तमोगुण युक्त कर्मों से मन को रोक सत्वगुण प्रधान हो; अर्थात् सत्वगुण को उत्तम-मध्यम-निकृष्ट के अनेकों भेदों में जो उत्तम सत्वगुण है, जिसको शुद्ध सत्वगुण भी कह सकते हैं,शुद्ध सत्वगुण होके उससे भी मन का निरोध कर अर्थात् परमात्मा में और उसकी आज्ञापालन रूप धर्मयुक्त कर्म के अग्रभाग में चित्त ठहरा रखना, अर्थात् सब ओर से मनकी वृत्ति को रोकना 'निरुद्धावस्था' कहलाती है। इस सर्ववृत्ति निरोध होने पर सबके द्रष्टा ईश्वर के स्वरूप में जीवात्मा की स्थिति होती है। यही तृतीय धाम सर्वोत्तम सुख है जो शुद्ध सत्व से सहित है, जिसमें विद्वान् लोग स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं, फिर कभी दुःख सागर में नहीं गिरते।

'वही परमात्मा अपना गुरु,आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।'

वही परमात्मा अपना गुरु है अर्थात् प्राचीन अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा और ब्रह्मादि पुरुष सृष्टि के आदि में हुए, उनसे लेकर हम पर्यन्त और हमसे आगे जो होने वाले हैं, सबका गुरु है। वेद द्वारा सत्य अर्थों का उपदेश करने से परमेश्वर का नाम 'गुरु' है। ईश्वर में काल=क्षणादि काल गति का कोई प्रचार नहीं, इसलिए वह नित्य है। वही आचार्य अर्थात् पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त सब पदार्थों का, अपने प्रकाश से जीव की बुद्धि को प्रकाशित कर, उस प्रकाशित बुद्धि में चयन करता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में सब जड़ जगत् रच, उसको नियम में रखकर प्रकाशित करता और अपने अनन्त महिमा से विराजता हुआ एक ही राजा है। पक्षपातरहित जो धर्मरूप आचरण है वह न्याय है और पक्षपातरहित न्यायाचरण ही जिसका स्वभाव है वह न्यायाधीश है। ऐसे उस परमात्मा की जो गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिल के=ईश्वर के विचार में सब एक निश्चय-युक्त होके सदा=सर्व कालों में और शरीर में ज्वर, पीड़ा आदि को सहन करके भी उसकी भक्ति अर्थात् अपने को ईश्वर समर्पण करें। इसमें कभी आलस्य न करें। उसके सहाय के बिना धर्म का पूर्ण ज्ञान और उसका अनुष्ठान पूरा कभी नहीं होगा।

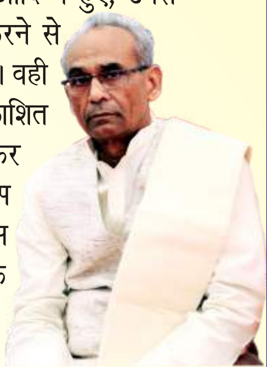

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली
साभार- उपासना-विज्ञान

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

This place has a state of art infrastructure. They have depicted our indian culture. They have beautiful art gallery and have depicted 16 sanskaar which is very adorable. One must definitely visit this place if anyone come to udaipur. - Mohot Mundra, Google review

न्यास द्वारा संचालित वेबसाईट पर न्यास भवन की सम्पूर्ण जानकारी से अवगत हुआ। महर्षि दयानंद सरस्वती के कालजयी ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना स्थली का दर्शन लाभ सन् १९९२ से ही समय समय पर लेने का सुअवसर मुझ सेवक को मिलता रहा है। राज्य सरकार से नवलखा महल आर्य समाज को हस्तगत हुए ३० वर्ष हो गए हैं । उससे पूर्व से ही श्रद्धेय श्री अशोक जी आर्य सा इस आर्यावर्त की ऐतिहासिक धरोहर को विश्व के मानचित्र में लाने के लिए अहर्निश सृजनरत रहते हुए जो त्याग और तपस्या की है। उसका परिणाम आज प्रत्यक्ष है। मैंने वो दिन भी देखा था जिस दिन आबकारी विभाग का कबाड़ ऋषिभक्तों द्वारा फेंका गया था। और आज उसी स्थान को स्वर्णिम स्वरूप में देख रहा हूँ । न्यास के यशस्वी महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि जिस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती महाराज का नाम विश्व के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित है, उसी तरह आप सभी का नाम भी नवलखा महल के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित हो। इस हेतु आर्य जगत् आप सभी का युगों युगों तक ऋणी रहेगा। मेरा हृदय पुलकित हो जाता है आज के न्यास भवन का दर्शन करके। पुनः आप सभी का हार्दिक आभार एवं धन्यवाद। - राधेश्याम आर्य, पालड़ी, भीलवाड़ा

नमस्ते जी। हम उदयपुर एक विवाह में शामिल होने आए थे। परन्तु नवलखा महल देखने आने के कारण और आप सबसे मिलकर हमारी यात्रा अविस्मरणीय बन गई। आपके प्रेम से और संस्था के कार्य को देखकर मन में एक एक पल अंकित हो गया है। आपसे मिलकर बचपन की अनेक यादें भी ताजा हो गई। मेरे दादा जी और आदरणीय प्रेमभिक्षु जी की मित्रता, उनका हमारे परिवार में आना जाना, तपोभूमि पत्रिका का यज्ञरत परिवार के चित्र वाला मुखपृष्ठ, आपका आना सब एक वीडियो की तरह आंखों के सामने तैर गया। आपका बहुत बहुत धन्यवाद। इतनी सुंदर संस्था को बनाना और चलाना एक अत्यंत ही धैर्य और परिश्रम का कार्य है। आपका अभिनंदन - श्री महेंद्र आर्य, मुम्बई

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

संस्कार वीथिकास्थ
(सीमन्तोन्नयन संस्कार)

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रूप से अनुगृहीत हूँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।**

न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है। हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक- अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर
बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

जिन महानुभावों ने हमारे एक आग्रह पर न्यास को सम्बल प्रदान करने हेतु 5100 रु. (इक्कावन सौ) प्रतिवर्ष देकर सत्यार्थ मित्र बनना स्वीकार किया उनके चित्र को यहाँ हृदय से धन्यवाद प्रेषित करते हुए दे रहे हैं। बाकी साथियों के चित्र अगले अंक में दिए जायेंगे।

मनीष के पटेल, गुजरात

सुधा गुप्ता, दिल्ली

सज्जन सिंह जी, जयपुर

पूर्णचन्द जी, कानोड

आनन्द रस्तोगी, मसूरी

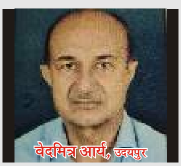
वेदमित्र आर्य, उदयपुर

सपना सिंघल, उदयपुर

अमिताभ आर्य, टाण्डा

मनीष आर्य, टाण्डा

डा. वीरोत्तम तोमर, मेरठ

विवेक तापड़िया, कोटा

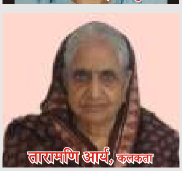
तारामणि आर्य, कलकत्ता

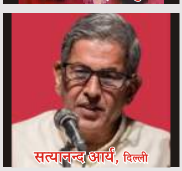
सत्यानन्द आर्य, दिल्ली

प्रणव आर्य, दिल्ली

अविनाश सिंह, चण्डीगढ़

संध्या नीरज, दिल्ली

आत्म निवेदन

काम पर ठप्पा

राजनीति और विशेष रूप से चुनावी राजनीति हमारे लेखन का केंद्र बिन्दु नहीं रही है परन्तु इस बार ऐसा लगा कि स्वतंत्रता के ७५वें वर्ष में शायद यह कहा जा सकता है कि भारतीय लोकतंत्र में मतदाता अब परिपक्व हो गया है। अतः कुछ लिखने का मन हुआ। भ्रम और भुलावों के मध्य मतदाता सत्य को और अपने हित को पहचानने लगा है। पांच राज्यों में चुनाव हुए। हम विशेष रूप से उत्तर प्रदेश पर अपना ध्यान केन्द्रित करेंगे। इस चुनाव से पूर्व शासकीय दल के विरुद्ध अनेक विमर्श खड़े किये गए, परन्तु यही लगता है कि जनता इन विमर्शों के खोखलेपन को पहचान गयी। जबकि वातावरण ऐसा बनाया गया कि उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ दल की वापिसी असंभव है। इन झूंठे विमर्शों में सर्वप्रथम था एक वर्ष से भी लम्बे समय तक चला किसान आन्दोलन, जिसके माध्यम से यह दावा किया गया कि पूरे देश के किसान त्रस्त हैं तथा संयुक्त किसान मोर्चे में किसानों के बीसियों संगठन सम्मिलित हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जिस आन्दोलन ने लाखों लोगों के आवागमन पर और परोक्ष रूप से उनके जीवन पर विपरीत प्रभाव डाला, करोड़ों रुपयों की अर्थव्यवस्था को बर्बाद किया, वह था तो अभूतपूर्व ही। यहाँ तक कि उपयोगी होते हुए भी सरकार ने इन कानूनों को बापस लिया। और इसी कारण यह तय माना जा रहा था कि उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ दल की करारी हार होगी। यह भी प्रदर्शित किया गया कि किसानों से जुड़े जाट ही हैं अतः जाट मतदाता सत्तारूढ़ दल का सफाया कर देगा। दूसरी ओर चुनाव पूर्व लखीमपुर खीरी की घटना घट गयी, जिसमें कुछ लोगों को जीवन गंवाना पड़ा। हमारा विषय यह काण्ड नहीं है अतः इसका विश्लेषण नहीं करेंगे, बस यही टिप्पणी करेंगे कि यहाँ कानून ने अपना कार्य किया तथा दोषी मंत्रीपुत्र पर कार्यवाही की गयी। परन्तु राजनीति में ऐसी घटनाओं से झूठा विमर्श खडा किया जाता है, यह भारतीय राजनीति के लिए कोई नया नहीं है। यहाँ भी ऐसा हुआ। परन्तु पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा की शानदार जीत तथा पंजाब में बलवीर सिंह राजेवाल को मात्र ४६०० वोट मिलने ने इस आन्दोलन के जनता से जुड़ाव की पोल खोल दी। हाथरस और उन्नाव में महिलाओं के साथ बर्बर अपराध हुए तो विमर्श खडा किया गया कि जो योगी सरकार सुरक्षा और सुशासन के विषय को अपना तुरप का पत्ता समझती है उसके राज्य में ये नृशंस काण्ड क्योंकर हुए? विपक्ष तथा मीडिया संस्थानों द्वारा इन घटनाओं का इतना विस्तार किया गया कि यह आपाततः दिखने लगा था कि आगामी चुनावों में योगी सरकार का सूपड़ा साफ हो जाएगा। यहाँ यह बतादें कि उक्त काण्ड हुए जरूर, नृशंस थे, दुर्भाग्यपूर्ण थे, इसमें कोई संदेह नहीं, पर सरकार ने निष्पक्ष रूप से अपनी कार्यवाही की, यह भी जग जाहिर है।

उधर उत्तरप्रदेश सरकार ने कानून व्यवस्था को ही अपना प्रमुख हथियार बनाया था। पूरे चुनाव में योगी विरोधी भी कानून व्यवस्था की सुव्यवस्था तथा उपस्थिति से मुखर इनकार नहीं कर सके और कहीं कहीं इनकार भी किया तो वह स्वर इतना खोखला था कि उससे सरकार के दावे की ही पुष्टि हो रही थी। इस उपलब्धि को सम्पूर्ण विपक्ष महत्वहीन बनाने में जुटा रहा जबकि हमारी दृष्टि इस बात पर लगी रही और सच कहें तो इन चुनावों में अत्यधिक रुचि इस कारण रही कि क्या कोई सरकार कानून व्यवथा का शासन स्थापित करने के अपने सर्वप्रमुख कर्तव्य का पालन करके भी लोक रंजन नहीं कर पायी? क्या वह तब भी चुनाव हार सकती है? क्योंकि हमारी दृष्टि में अपने नागरिकों की जान, संपत्ति और अस्मिता की सुरक्षा करना राज्य का प्राथमिक दायित्व है और सच पूछा जाय तो राज्य की उत्पत्ति

ही इस के निमित्त हुयी थी। वेदों में अनेक मन्त्रों में प्रजा की सुरक्षा राजा का प्राथमिक कर्तव्य बताया गया है। लोक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना बाद की है।

एक संकल्पना के अनुसार सृष्टि में मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही राज्य की स्थापना हो गयी थी ऐसा नहीं है। परिवार पहले बना। धीरे-धीरे पारस्परिक सम्बन्ध जटिल होते चले गए क्योंकि जनसंख्या, कार्यक्षेत्र और आवश्यकताओं में वृद्धि से जटिलता आती है। जिससे आपसी संघर्ष जन्म लेता है। इन संघर्षों के समाधान हेतु जिस संस्था की रचना की गई वह 'राज्य संस्था' के रूप में जानी जाने लगी। सृष्टि में सर्वप्रथम 'परिवार' नामक संस्था ने आकार लिया होगा, जिसमें पति, पत्नि, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री, माता, पिता आदि के सम्बन्ध बने तथा परिवार के मुखिया, परिवार के सदस्यों के हितों की रक्षा करने लगा। जैसे-जैसे जनसंख्या में वृद्धि हुई, परिवार भी बढ़े होंगे और उनके हितों और स्वार्थों में आपसी टकराहट में वृद्धि हुई होगी ।

तत्कालीन समाज में भी हर काल की भाँति आर्य और दस्यु रहे होंगे यह स्वाभाविक है। स्वार्थी और उदार प्रवृत्ति के लोग हर समाज, परिवार में होते हैं और ये ही संघर्षों को जन्म देते हैं। इससे आपसी संघर्ष बढ़े होंगे यह भी सुनिश्चित है। तब परिवारों ने मिलकर एक संगठन और बनाया जो राज्य कहलाया। इसका कार्य समाज में शान्ति बनाए रखना था। न्याय पूर्वक सबके हितों की रक्षा करना था। इसके लिए राज्य को दंड का प्रवर्तक बनाया गया और सब मनुष्यों को दंड के अधीन बनाया गया क्योंकि यही दंड सबके अधिकारों की, उनकी संपत्ति की, उनकी अस्मिता की, उनके जीवन की रक्षा करने वाला था।

यह संक्षिप्त विवरण हमने इस बात को पुष्ट करने के लिए दिया कि कानून का शासन, सबकी सुरक्षा राज्य का सर्वोपरि कर्तव्य है और यदि वह इस कर्तव्य की पूर्ति करता है और दंड व्यवस्था को भलीभाँति लागू करता है तभी उसे शासन का अधिकार है। दंड व्यवस्था के महत्त्व को रेखांकित करते हुए मनु महाराज ने कहा है कि 'जहां कृष्णवर्ण रक्तनेत्र भयंकर पुरुष के समान पापों का नाश करनेहारा दंड विचरता है, वहां प्रजा मोह को प्राप्त न होके आनंदित होती है, परन्तु जो दण्ड का चलाने वाला पक्षपातरहित विद्वान् हो तो।'

उत्तर प्रदेश में कमोवेश यह दावा किया जा रहा था कि कानून और व्यवस्था का संचालन इस तत्परता से किया गया था कि जहां एक ओर अपराधी जेल में बंद थे तो वहीं अपराध के माध्यम से लूटी खसोटी संपत्ति को भी बुलडोजर चलाकर ध्वस्त कर उनके अपराधी इरादों को भी ध्वस्त कर दिया गया था, तो दूसरी ओर सामान्य जनता भयमुक्त वातावरण की सुखद बयार का अनुभव कर रही थी। सम्पूर्ण चुनाव के दौरान जनता के साक्षात्कारों में बार-बार यह प्रमाणित हुआ। अतः उत्सुकता थी कि जिस सरकार ने संगठित अपराध पर करीब करीब लगाम लगा दी थी, वह पुनर्निर्वाचित होती है या नहीं? हाथरस, उन्नाव लखीमपुर खीरी के रूप में, उक्त तथ्य को झुठलाने हेतु बढ़ा-चढ़ाकर झूठे विमर्श खड़े किये गए। पर साबित हुआ कि मतदाता आज ऐसे काल्पनिक विमर्शों को चीरकर देख लेने में सक्षम हो गया है। अपराध अवश्य हुए परन्तु दोषियों को दंड देने में सरकार की चाहत को जनता ने जानने में चूक नहीं की। परिणाम यह रहा कि लखीमपुर खीरी की आठों सीट भारतीय जनता पार्टी ने जीत लीं। जो आक्रोश दिखाया जा रहा था वह तिरोहित हो गया।

हाथरस में अंजुला सिंह माहौर एक लाख से अधिक के अंतर से जीतीं। समाजवादी पार्टी तीसरे नंबर पर रही। उन्नाव में बीजेपी के पंकज गुप्ता ने लगभग ५२ प्रतिशत मत प्राप्त कर विजय प्राप्त की। हम यह नहीं कहना चाह रहे कि अपराध घटित हों, कोई बात नहीं। जीत फिर भी मिलती है। बल्कि यह कि अपराध घटित होने पर सरकार दोषी पर निष्पक्ष कार्यवाही करे यह आवश्यक है और उक्त प्रकरणों में जाहिर है जनता को, मतदाता को ऐसा लगा।

उत्सुकता यह भी थी कि जो प्रदेश पूर्व में दंगा प्रदेश के नाम से जाना जाता था, जहां साम्प्रदायिक तापमान सदैव उबलता रहता था तथा आये दिन दंगे होते थे वहां पांच वर्षों में एक भी दंगा नहीं हुआ, क्या इसे उत्तर प्रदेश की जनता सरकार की उपलब्धि नहीं मानेगी? एक विचित्र बात रही कि जिसकी हर ओर चर्चा होनी चाहिए उस बात को सामने न लाने हेतु विपक्ष सचेत रहा, मीडिया में भी विशद् चर्चा नहीं हुयी, और वह है सरकार की ईमानदारी। सोचिये ऐसे कितने चुनाव हुए होंगे जिसमें सत्ता पक्ष पर भ्रष्टाचार का आरोप न लगा हो। परन्तु उक्त चुनाव ऐसा रहा जिस में योगी सरकार पर भ्रष्टाचार का एक भी आरोप नहीं लगा। तो कानून का शासन जिसके चलते विशेष रूप से माताओं बहिनों को निर्भयता की प्रतीति हुयी और भ्रष्टाचार का अभाव सरकार का मजबूत पक्ष था। इसके अतिरिक्त बिना किसी भेदभाव के सरकारी लोक कल्याणकारी योजनाओं का जनता के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंचाना एक ऐसी विरल उपलब्धि रही जिसने जाति के बंधन में जकड़े उत्तर प्रदेश के मतदाता को उन्मुक्त कर दिया कि वह अपने कल्याणप्रदाता को उसका प्रतिफल दे।

यह संभवतः पहली बार है कि जातिगत समीकरण पूरी तरह ध्वस्त होते दिखाई देते हैं। सपा ने रालोद के साथ गठबंधन किया जिसका स्वाभाविक अर्थ यही लगाया गया कि जाट मतदाता सपा को वोट करेंगे, जिसमें तड़का यह लगाया गया कि जाट बीजेपी से बहुत नाराज हैं। नतीजा यह निकला कि आश्चर्यजनक तरीके से जाटों ने बीजेपी को २०१७ की अपेक्षा लगभग १६ प्रतिशत अधिक वोट दिया। जाति समीकरणों में केवल यादवों ने पूरी मजबूती के साथ सपा को मत दिया इसके अतिरिक्त लगभग सभी जातिगत समीकरण ध्वस्त हो गए

प्रतीत होते हैं। यह भी राजनीति में एक नयी कहानी है। स्वामी प्रसाद मौर्या भी इसके उदाहरण हैं। अपनी जाति के नेता होने के नाते 'जिधर वे हैं उधर ही विजयश्री है' यह कहते हुए वे दल बदल कर भाजपा से सपा में चले गए। कोई जातीय राजनीति काम नहीं आयी। जनता ने उन्हें उनके घर का रास्ता दिखा दिया, उनके बेटे भी हार गए।

अब यदि सम्प्रदाय की बात न की जाय तो कोई भी चुनावी विश्लेषण विशेषरूप से उत्तर प्रदेश का अधूरा ही रहेगा। भारतीय राजनीति में एक विशेषता रही है कि अल्पसंखयकों की बात की जाय, खुले रूप से उन्हें गोलबंद करने की बात की जाय, उन्हें बहुसंख्यकों के मुकाबले विशेषाधिकार देने की बात की जाय, जो कि देखा जाय तो विशेषमतस्थ लोगों का तुष्टीकरण है परन्तु इसे वैसा कहा कभी नहीं गया, यह हमेशा धर्मनिरपेक्षता के दायरे में आता रहा। ऐसा ही समझे जाने की मानसिकता अल्पसंख्यक समुदायों की रही। इसी कारण दल विशेष समय-समय पर उनको गोलबंद करके अपने पक्ष में मतदान करने को राजी करते रहे और वे खुशी-खुशी करते रहे। पर अब इस प्रक्रिया का सच लोगों के सामने आने लगा है। मतजनित मानसिकता से उत्पन्न अनेक सामजिक व राष्ट्रीय संकटों का मूल कारण लोग समझने लगे हैं, स्थिति परिवर्तित होने लगी है। अब इस विशेषाधिकार को समाप्त किया जाय और ऐसा करने में ही राष्ट्रहित और समाजहित है, ऐसा लोगों को लगने लगा है। परन्तु इस जागृति का नुकसान उन दलों को है जो तुष्टीकरण की राजनीति के सहारे अपनी नौका खेते रहे हैं। तो इस जागृति को उन्होंने धर्मान्धता का नाम दे दिया। उनका यह कदम उनके निकट तो आत्मरक्षा का ही प्रयास था। या तो यह होता कि वे वास्तविकता को समझ अपनी नीति और रीति में बदलाव करते पर उन्होंने ऐसा किया नहीं परिणामतः वे आज हाशिये पर खड़े हैं। उत्तर प्रदेश में ढाई प्रतिशत वोट पाकर वे इसका सही कारण समझ पा रहे हैं या नहीं यह ईश्वर ही जाने। हाँ मोदी जी के नेतृत्व वाली बीजेपी ने अपने को हिन्दू कहने में शर्म के भाव का त्याग कर दिया है, या कभी शर्म समझी ही नहीं। तुष्टीकरण उनकी नीति रही नही। तुष्टीकरण बहुसंख्यक का भी नहीं। उन्होंने प्रारम्भ में इसका खामियाजा भी उठाया परन्तु वे तुष्टीकरण के दुश्चक्र में नहीं पड़े। यद्यपि उन्होंने अल्पसंख्यकों के साथ दुर्भावना से कार्य किया ऐसा भी नहीं लगता फिर भी अल्पसंख्यकों के मन में उन्हें लेकर यह भाव दृढ़ होता जा रहा है कि वे बीजेपी के शासन में न्याय नहीं पा सकेंगे, अतएव चालाक राजनीतिक पार्टियों ने अभी भी उन्हें अपना बंधक बनाए रखने में सफलता हासिल की है। बीजेपी का भय दिखाकर और भी अधिक मजबूती के साथ एकमुश्त वोट कराने के प्रयास की सफलता पहले दिल्ली में और अब उत्तर प्रदेश में प्रमाणित हुयी है। उत्तर प्रदेश में सपा को यादवों के अतिरिक्त अगर किसी समुदाय के लगभग पूरे के पूरे वोट प्राप्त हुए हैं तो वे अल्पसंख्यकों के हैं। अन्य सभी दलों की झोली इस बार इनके मतों से रिक्त रही है। अब बीजेपी इनका विश्वास कैसे अर्जित करेगी यह भविष्य के गर्भ में है।

हिन्दू राजनीति(?) अगर कोई है भी तो वह क्रिया की प्रतिक्रया है। यह विचित्र क्यों लगता है? क्योंकि पहले ऐसा कभी नहीं हुआ। तुष्टीकरण के पैरोकारों ने सदा सर्वदा के लिए यह मान लिया था कि हिन्दुओं में राजनीतिक एकता का भाव कभी उत्पन्न नहीं हो सकता, अतः जब ऐसा होता हुआ दिख रहा है तो वे इसे बहुसंख्यक अतिवाद का रंग देने से नहीं चूक रहे हैं। गत ७ वर्षों में धीरे-धीरे जो परिवर्तन हुए हैं उनसे राजनीति का परिदृश्य ही बदल गया है। बीजेपी ने कभी छिपाने की चेष्टा नहीं की परन्तु जो कोई हिन्दू की बात नहीं करता था अब अपने आप को सबसे बड़ा हिन्दू दिखाने में लगा है। और तो और वे नेता जो श्री राम के नाम से चिढ़ते थे, वे माथे पर त्रिपुंड लगाए काशी की गलियों में देखे गए। अखिलेश यादव अपनी सभाओं में कहते रहे कि भगवान कृष्ण उनके सपने में आकर कहते रहते हैं कि आप की सरकार बनेगी। सत्ता बहुत से खेल दिखाती है, बहरूपियापन सिखाती है, यह प्रमाणित हो रहा है। मैं सोचता हूँ कि अल्पसंख्यकों में ७० वर्षों से इतना भय डाल दिया है कि सचाई को वे देख नहीं पाते। वरना उदाहरण के तौर पर योगी की सरकार और उनके शासन की बात करें तो अल्पसंख्यकों के विपरीत इस आधार पर कि वे अल्पसंख्यक हैं, कुछ हुआ हो ऐसे तो प्रमाण नहीं मिलते। अपराधी कोई धर्म का हो उसके साथ कानून सम्मत कार्यवाही होगी ही। अब उसे ही यह मान लेना कि यह अल्पसंख्यक होने के कारण है यह उचित नहीं। मुनव्वर राणा का यह कहना कि योगी की सरकार आयेगी तो वे उत्तर प्रदेश छोड़ देंगे बेमानी है। वे स्वयं अपने विरोध का वातावरण बनादें तो कोई क्या करेगा। योगी सरकार की लोक कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अल्पसंख्यकों को बराबर मिला है, चाहे वह शौचालय हो, या मकान, मुफ्त राशन हो या वैक्सीन। फिर भेदभाव कहाँ हुआ है इस पर गंभीर विचार करने की आवश्यकता है।

राजनीति में सभी को सत्ता चाहिए। अगर एक पक्ष अल्पसंख्यकवाद की राजनीति करता रहेगा तो दूसरे को 'अस्सी बनाम बीस' कहने से किस आधार पर रोकोगे? कुछ भी हो हमारा मानना है कि भारतीय जनमानस अब परिपक्व हो चुका है। उसके कल्याण के लिए काम करने वालों को, अफवाहों के कितने ही बादलों से ढक दिया जाय, वे पुरस्कृत करने के अपने कर्तव्य से चूकते नहीं हैं। यदि एक ओर उत्तर प्रदेश इसका उदाहरण है तो दूसरी ओर नाकारा और भ्रष्ट सरकार को उखाड़ फेंक कर दण्डित करने में वे पीछे नहीं रहेंगे, पंजाब में यह सिद्ध हो गया है। अतः सत्ता में बने रहना है तो काम कीजिए, ईमानदारी से कीजिए। जनता का कल्याण कीजिए। यही सफलता का एकमात्र मार्ग है, पांच राज्यों के चुनाव नतीजे यही कह रहे हैं।

- अशोक आर्य

सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर

चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

गर्भाधान संस्कार

सबसे पहला गर्भाधान संस्कार है। आने वाले जीवात्मा की चेष्टा के लिए आधार तैयार करने का नाम ही गर्भाधान संस्कार है। कल्पना कीजिए कि आप को किसी गौरवान्वित अतिथि की प्रतीक्षा है आप उसके ठहराने के लिए भवन निर्माण करते हैं, उसके आराम के लिए सामग्री एकत्रित करते हैं। इसी प्रकार जो माता-पिता चाहते हैं कि हमारे घर में एक अच्छा जीव मिले, उनको जीव के रहने के लिए भवन निर्माण अर्थात् शरीर निर्माण की तैयारी करनी चाहिए। जिस प्रकार के शरीर बनने की संभावना होगी उसी प्रकार का जीव उसमें आवेगा। परमात्मा का नियम है कि वह जीव को उसके कर्मानुसार फल देता है अर्थात् अमुक फल उसी को मिलेगा जो अपने कर्मों से उसका अधिकारी होगा। इसलिए यदि कोई माता-पिता महल बनाएंगे तो उसमें महल में रहने योग्य जीव भेजा जाएगा यदि अस्तबल बनाएंगे तो अस्तबल में रहने योग्य जीव भेजा जाएगा यदि कूड़ाघर बनाएंगे तो उसमें रहने के लिए भी वही जीव आएगा जो कूड़ाघर का अधिकारी हो। मांडूक्योपनिषद् में ब्रह्मवित् पुरुष के लिए लिखा है।

नास्याब्रह्मवित्कुले भवति य एवं वेद।

उसके कुल में कोई ऐसा पुरुष जन्म नहीं लेता जो ब्रह्मवित् न हो। ब्रह्मवित् माता-पिता के शरीरों से ऐसा शरीर बनने की संभावना नहीं है जिसमें अब्रह्मवित् जीव रह सके। अतः जिस प्रकार की संतान की इच्छा हो, उसी प्रकार की तैयारी माता-पिता को करनी होगी। आत्मा मृत्यु के पश्चात् जिस सूक्ष्म शरीर को लेकर चलता है वह पहले पहल पिता के वीर्य में विकास पाता है और उसके पश्चात् माता के गर्भाशय में प्रवेश करता है। अतः स्त्री पुरुष का समागम गर्भाधान संस्कार की पहली क्रिया नहीं है। दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिए कि पहले तो बच्चा पिता के घर में जाता है फिर माता के घर में। भेद केवल इतना है कि माता का गर्भाशय और प्रकार का है और पिता का गर्भाशय और प्रकार का, परंतु है गर्भाशय पिता का भी। पिता के शरीर में वीर्यकोष जीव का गर्भाशय है। यही आगंतुक जीव का शरीर है । इसलिए जिस प्रकार का भोजन पिता करेगा उसी प्रकार का शरीर तैयार होगा। यह तो रही भौतिक बात । परंतु इस भौतिक शरीर पर पिता के मन का भी आभास पड़ेगा। उसमें पिता के प्रत्येक अंग से किए हुए कार्यों की प्रतिच्छाया रहेगी। अतः पिता को सोच लेना चाहिए कि जिस प्रकार के बालक की उसे इच्छा है उसी प्रकार का उसका आचरण होना चाहिए । इसीलिए सामवेदीय मंत्र ब्राह्मण में कहा है

अंगादंगात्संभवसि हृदयादभिजायसे
आत्मावै पुत्रनामासि स जीव शरदःशतम्।।

अर्थात् अंग अंग से बालक उत्पन्न होता है अर्थात् प्रत्येक अंग की प्रतिच्छाया शरीर पर पड़ती है। हृदय की सभी भावनाएं सार रूप से वीर्य के उस कण में होती हैं जिसको जीव ने अपना शरीर बनाया हुआ है। इसी को आजकल के डाक्टर spermatozoa कहते हैं। इसलिए गर्भाधान का सूत्रपात स्त्री प्रसंग से बहुत पहले होना चाहिए।

बच्चे का शरीर पिता के शरीर में एक निश्चित अवस्था से

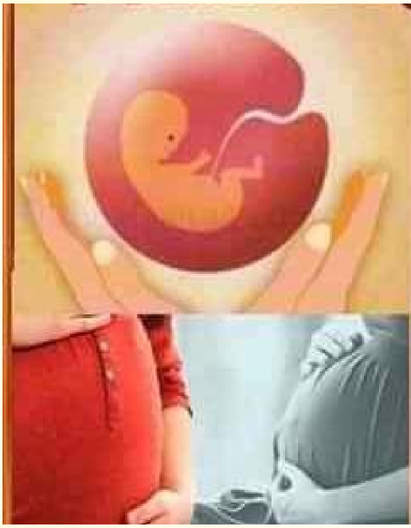

हमारे शास्त्रों में मान्य सोलह संस्कारों में गर्भाधान पहला है। गृहस्थ जीवन में प्रवेश के उपरान्त प्रथम कर्त्तव्य के रूप में इस संस्कार को मान्यता दी गई है। गार्हस्थ्य जीवन का प्रमुख उद्देश्य श्रेष्ठ सन्तानोत्पत्ति है। उत्तम संतति की इच्छा रखनेवाले माता-पिता को गर्भाधान से पूर्व अपने तन और मन की पवित्रता के लिये यह संस्कार करना चाहिए। वैदिक काल में यह संस्कार अति महत्वपूर्ण समझा जाता था।

आगे नहीं बढ़ सकता, इसके लिए अधिक अवकाश और भोजन साधन चाहिए। यह सामग्री उसको माता के गर्भ में ही मिल सकती है अतः पिता का कर्तव्य है अपने शरीर से इस धरोहर को निकालकर माता के सुपुर्द कर दे । इसके लिए स्त्री प्रसंग की आवश्यकता होती है परंतु प्रथम इसके कि माता गर्भ धारण करे उसको इस महान् कर्तव्य के योग्य बनना चाहिए। शुद्ध शरीर वाली माता जीव बालक के शरीर को भोजन पहुंचा सकेगी। परन्तु भोजन ही का प्रश्न नहीं है माता की दिनचर्या इस प्रकार की हो कि पूर्व जन्म के आए हुए अच्छे प्रभावों का विकास हो और बुरे प्रभाव शनैःशनैः तिरोभूत हो जाएं, इसीलिए वेद में कहा है

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वती

अर्थात् माता को 'सिनीवालि' और 'सरस्वती' होना आवश्यक है। निरुक्तकार यास्क मुनि 'सिनीवालि' का अर्थ करते हैं

सिनमन्ने भवति सिनाति भूतानि वालं पर्व वृणोतेस्तस्मिन्नन्नवती।

'सिन' का अर्थ है अन्न। क्योंकि अन्न भूतों अर्थात् प्राणियों को रस आदि धातुओं से बांधता है। 'वाल' कहते हैं पर्व को अर्थात् जिसमें अन्न ग्रहण किया जाए। इसलिए 'सिनीवालि' का अर्थ हुआ 'अन्नवाली' अर्थात् जिसमें जीवात्मा अपने शरीर के लिए भोजन ग्रहण करे। इसलिए गर्भाधान संस्कार का मुख्य भाग यह भी है कि माता ऐसा भोजन करे जिससे उसके शरीर की धातुएं सर्वदा उत्तम हों और उनसे बालक का उत्तम शरीर बन सके। गर्भधारण के पश्चात् भी माता के भोजन का यथोचित प्रबंध होना चाहिए उसको घर भर में सबसे अच्छा भोजन मिलना चाहिए। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है-'माता और पिता को अति उचित है कि गर्भाधान के पूर्व मध्य और पश्चात् मादक द्रव्य मद्य रूक्ष बुद्धि नाशक पदार्थों को छोड़कर जो शांति आरोग्य बल बुद्धि पराक्रम और सुशीलता से सभ्यता को प्राप्त करें वैसे घृत दुग्ध मिष्ट अन्नपान आदि श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन करें कि जिससे रजस वीर्य भी दोषों से रहित होकर अत्युत्तम गुणयुक्त हों। (सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समुल्लास)। पाठकों को स्वामी जी के अति, पूर्व, मध्य और पश्चात् शब्दों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। माता के लिए दूसरा शब्द सरस्वती है। निरुक्त के ग्यारहवें अध्याय के २६वें कांड में 'ज्ञानवती' का नाम 'सरस्वती' दर्शाया गया है। ऋग्वेद के प्रथम मंडल के तीसरे सूक्त के १०वें ११वें और १२ वें मंत्र में सरस्वती की व्याख्या है।११वां मंत्र इस प्रकार है

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्। यज्ञं दधे सरस्वती।

अर्थात् सत्य आदि शुभ गुणों की प्रेरक और बुद्धियों के चेताने वाली शक्तियों को सरस्वती कहते हैं। केवल अन्न आदि भौतिक पदार्थ ही शरीर निर्माण के कारण नहीं हैं। माता की मस्तिष्कक शक्तियां बच्चे के मस्तिष्क को बनाती हैं। मन और शरीर का परस्पर सम्बन्ध है। एक का दूसरे पर प्रभाव पड़ता है। मनोवैज्ञानिक और शरीर विज्ञान अलग नहीं हैं। कभी कभी मानसिक चिन्ताएं शरीर को दुर्बल कर देती हैं। चाहे भोजन अच्छा ही क्यों न मिले? कभी कभी बुरा भोजन मन की शक्ति को निर्बल कर देता है। अतः माता के विचार न केवल बच्चे के मस्तिष्क पर ही प्रभाव डालते हैं। किंतु उसके शरीर निर्माण के भी उत्तर दाता होते हैं इसलिए माता के विचारों को शुद्ध करने के लिए गर्भाधान संस्कार का यज्ञ संबंधी भाग अत्यावश्यक है। ईश्वर प्रार्थना और उपासना से माता-पिता दोनों का मन शुद्ध होगा और जब माता-पिता दोनों पास बैठे हुए प्रायश्चित के २० मंत्रों से आहुतियां देंगे और उनके अर्थों को समझेंगे तो उत्तम विचारों की लहरें उनके मस्तिष्क में उठेंगी। मंत्रों के अवलोकन से पता चलता है कि माता के बुरे विचारों के नाश के लिए प्रार्थना की गई है।

यास्याः पापी लक्ष्मीस्तनूक्तामस्या अपजहि स्वाहा।

अर्थात् इस स्त्री में जो पति के प्रतिकूल वासनाएं हों वह भी नष्ट हो जाएं। वर और वधू के विचारों का एक होना ही संतान के लिए हितकर है। यह तभी हो सकता है जब उन दोनों के गुण कर्म और स्वभाव एक हों अर्थात् वे सवर्ण हों। इसीलिए मनु जी ने कहा है

उद्वहेत द्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम ।(मनु ३/४)

और विचारों के एकत्व के लिए ही विवाह संस्कार में यह प्रतिज्ञा की जाती है कि

मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तमनु चित्तं ते अस्तु।
ममवाचमेकमना जुषस्व प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।।

वर और वधू का चित्त एकसा हो उनमें किसी प्रकार का

भेदभाव ना हो, ऐसा होने से ही संतान के उत्तम होने की संभावना है।

कल्पना कीजिए कि एक बच्चे के माता-पिता भिन्न भिन्न विचारों के हैं। एक कहता है कि तुम इस प्रकार चलो और दूसरे की आज्ञा इसके सर्वथा विरुद्ध होती है, तो बच्चे के नष्ट होने में कोई कसर न समझनी चाहिए। बच्चा पहले उच्छृंखल होगा फिर बिगड़ जायेगा। इसी प्रकार यदि माता पिता भिन्न भिन्न गुण-कर्म और स्वभाव के हैं तो गर्भस्थ बालक के पूर्वजन्म के प्रभावों पर कभी कुछ और कभी कुछ असर पड़ेगा और माता पिता के मनोभाव एक दूसरे के सहायक न होकर घातक बनेंगे, इसलिए आवश्यक है कि यदि पिता ने अपने मनोभावों द्वारा उस समय जब बालक का शरीर वीर्य कण के रूप में था एक प्रकार का उत्तम प्रभाव बच्चे के शरीर पर डाल दिया तो 'सिनीवाली' और सरस्वती रूपी माता उसी प्रभाव को ग्रहण करने में सहायता दे। माता का उत्तरदायित्व उतना बच्चे के उत्पन्न के पश्चात् नहीं रहता जितना गर्भस्थ अवस्था में होता है। क्योंकि जन्म के पश्चात् तो बच्चा बाह्य संसार से स्वयं भी बहुत से प्रभाव ग्रहण करने लगता है। परन्तु जन्म के पूर्व समस्त प्रभाव माता रूपी शीशे के द्वारा केन्द्रीभूत होकर ही बच्चे तक पहुंचते हैं। यदि माता भूखी रहती है, यदि माता पर कष्ट पड़ता है, यदि माता-पिता में कलह रहती है, यदि माता अपमान को सहकर दासी रूप में रहती है, यदि माता को अपना कलेजा मसोस कर रहना पड़ता है, यदि माता विषयगामिनी और व्याभिचारिणी है तो यह सब भाव अवश्य ही बालक तक पहुंचते हैं। यदि बालक के पूर्व जन्म के प्रभावों में अधिकांश बुरे हैं और कुछ अच्छे हैं और गर्भस्थ दशा में माता पिता के विचार शुद्ध हैं तो बुरे प्रभाव उसी प्रकार मिट जायेंगे जैसे वर्षा में प्रतिकूल परिस्थिति पाकर पुदीना मुर्झा जाता है और यदि अधिकांश प्रभाव अच्छे हैं और माता पिता के विचार बुरे हैं तो इन अच्छे प्रभावों का भी शनैः-शनैः अन्त हो जायेगा। परन्तु यदि बच्चा सूक्ष्म शरीर के साथ पूर्वजन्म से उत्तम प्रभाव लाया है और गर्भावस्था में भी उत्तम संस्कार पड़ रहे हैं तो सोने पर सुहागा होगा। अनुकूल जलवायु पाकर शुभ गुणों का वृक्ष भली प्रकार फले फूलेगा।

- श्रीमान् बाबू गंगा प्रसाद,
हेडमास्टर डीएवी हाईस्कूल, प्रयाग
साभार वैदिक सिद्धान्त
(श्रीमद् दयानन्द जन्म शताब्दी स्मारक ग्रन्थ संख्या 10)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०२/२२

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	नि	■	■	२	२ व		२ रा	२	
३		ष्य	■	■	■	४	४ ब	४	■
५ ए	५	५	जा		■	६	६ रा	६	६ ण

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. 'शन्नोदेवी रभिष्टय' को किस ग्रह का मन्त्र मान लिया।
२. बारह ज्योर्तिलिंगों की कथा किस पुराण की है?
३. वेदों में किसका नाममात्र नहीं हैं।
४. भागवत किसका बनाया हुआ है?
५. सामवेद की कितनी शाखाएँ लुप्त कही जाती हैं।
६. अजामील ने अपने लड़के का क्या नाम रखा?

''विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०२२

गरीबी में उदारता, संकट में निर्भयता (प्रपंच में शान्त), एकान्त में संयम- श्री महाराज साधकों के लिए इस त्रिसूत्री कार्यक्रम का संकेत किया करते हैं। ये थोड़े-से शब्द इतने व्यावहारिक व अर्थगर्भित हैं कि यदि कोई इनकी साधना कर ले तो वह अपने जीवन को महान् सौभाग्य से भर सकता है। आइए! इन सटीक व सारभूत उपदेशों पर विचार करते हैं-

गरीबी में उदारताः-'उदारता' मानव हृदय की एक विशेष स्थिति है। हृदय का जब संकोच भाव समाप्त होकर विशालता में परिवर्तित हो जाता है, तो उस अवस्था का नाम है- 'उदारता'। हृदय इतना अधिक संकुचित हो सकता है कि उसमें किसी भी चीज को स्थान न मिले, और इतना विशाल भी हो सकता है कि सब कुछ ही उसमें समा जाए। वैदिक ऋषि भी जब 'ओ३म् महः पुनातु हृदये।' 'ओ३म् मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्' इत्यादि प्रार्थनायें करते हैं, तो उनका भाव अपने हृदय को विशाल बनाने का ही होता है।

समय-शक्ति-विद्या-बुद्धि-धन-ऐश्वर्य, भौतिक साधन, जमीन-जायदाद, समझ (ज्ञानशक्ति) इत्यादि व्यक्ति के पास जो कुछ भी शुभ होता है, वह उनके लिए होता है जिनको वह अपना समझता है। इस अपनेपन का जितना विस्तार होता जाता है, उसी अनुपात में हृदय की विशालता या उदारता बढ़ती जाती है। एक व्यक्ति का अपनापन अपने शरीर तक होता है, दूसरे का परिवार तक, तीसरे का गाँव तक, चौथे का अपने इलाके तक, पाँचवें का प्रान्त तक, छठे का देश तक, सातवें का विश्व तक। इनमें भी कुछ के प्रति अपनापन प्रधानरूप से होता है और शेष के प्रति गौणरूप से। जिसको प्रधानरूप से अपना मान लिया है उसके लिए तो सभी अपने-अपने स्तर पर त्याग कर रहे हैं- उसमें कुछ कहने-सुनने की बात ही नही है। पर उदारता की आवश्यकता वहाँ पड़ती है, जब कोई अपरिचित भी सहयोगापेक्षी होता है। यह उदारता ही है जो व्यक्ति का ध्यान अपने 'स्व' से हटाकर 'पर' पर केन्द्रित कर देती है।

इस समस्त संसार को देखने से ऐसा लगता है कि तीन प्रकार के लोग हैं- एक वे हैं 'जो सारी सृष्टि को अपने सुख के लिए समझते हैं'। दूसरे 'सारी सृष्टि के सुख के लिए अपने आपको समझते हैं'। तीसरे 'परस्पर के सुख के लिए यह सृष्टि है ऐसा समझते हैं'। पहली विचारधारा के लोग सर्वथा क्रूर, हृदयहीन, संकुचित, अनुदार हो जाते हैं। वे सृष्टि का उपयोग अपने सुख के लिए करते तो हैं, पर वैसा चाहते हुए भी वे सुख ले नहीं सकते। वे मात्र अपने अहं की तृप्ति, वह भी कुछ आंशिक रूप में ही कर सकते हैं। सुख उन लोगों के हिस्से में नहीं आता, क्योंकि सृष्टि नियम ही कुछ ऐसे हैं- व्यक्ति जो कुछ दूसरों को देता है वही उसे मात्रा में कई गुणा बढ़कर वापस मिलता है। जब व्यक्ति दूसरों के लिए

अच्छा-बुरा कुछ कर रहा होता है तो मानो उस समय उन कर्मों के बीज बो रहा होता है, जो बाद में फल के रूप में व्यक्ति को मिल जाते हैं। फल हमेशा अधिक ही होता है। बीज तो एक होता है, उस पर फल सैकड़ों लगते हैं। सो दूसरों को दुःख देने वालों को दुःख तथा सुख देने वालों को सुख और उसमें भी जिस तारतम्य भेद से वह दिया जा रहा है, उसी तारतम्य से प्राप्त होता रहता है।

दूसरे प्रकार के लोग जो पूर्ण रूप से अपने आप को सृष्टि के सुख के लिए समझते हैं, वे अवश्य ही संख्या में इतने कम होते हैं कि उनकी गिनती अंगुलियों पर की जा सकती है। पर युगों-युगों तक वे ही अपने प्रकाश से सम्पूर्ण मानवता को आलोकित करते रहते हैं। सृष्टि के सूर्य, चन्द्र, वायु इत्यादि समस्त प्राकृत पदार्थ बिना भेदभाव के जैसे अपनी सेवायें अर्पित करते हैं, उसी प्रकार वे भी निष्पक्ष होकर अपने प्रेम व करुणा को निरन्तर प्राणिमात्र के ऊपर उडेलते रहते हैं। उनके लिए न कोई अपना होता है न कोई पराया होता। न कोई शत्रु न कोई मित्र, न कोई उपकारी न कोई अपकारी, न कोई भाई न कोई सखा, न कोई बड़ा न कोई छोटा, न कोई हीन न कोई महान्, न कोई उच्च न कोई नीच- सब प्राणियों में सम रूप से अवस्थित उस आत्म-तत्त्व को ही वे देखते रहते हैं।

इसलिए वे भी सबके लिए 'सम' हो जाते हैं और देश-काल परिस्थिति के अनुसार जो उनके पास उत्तम से उत्तम ज्ञान, विद्या, धन, औषधादि होता है उसकी समान रूप से अपने 'निकटवर्ती जीव जगत्' पर वृष्टि करते रहते हैं। यहाँ यह ध्यातव्य है, जैसा कि कहा गया मनोवैज्ञानिक स्तर पर न कोई उनके निकट होता है न कोई दूर, इसलिए 'निकटवर्ती' शब्द उन लोगों की ओर संकेत मात्र है जो शरीर से उन महान् आत्माओं के समीप उनकी सेवायें लेने के लिए उपस्थित होते हैं। सचमुच ऐसे ज्ञानी पुरुषों का हृदय इतना विशाल होता है, जिससे बाहर कुछ भी शेष नहीं बचता। ये उदारता के मूर्त रूप ही होते हैं।

तीसरे प्रकार के लोग जो सृष्टि को परस्पर एक दूसरे के सुख के लिए मानते हैं, वे दूसरों के जीवन व स्वतंत्रता में बाधक न बनते हुए उनसे सुख लेते हैं तथा बदले में जो उनके पास है उसे देते भी रहते हैं। इस मान्यता वाले लोगों के अनेक स्तर भेद होते हैं, कुछ दूसरों से अधिक सुख लेना चाहते हैं और बदले में कम सुख देना चाहते हैं, दे पाते हैं या देते हैं। कुछ दूसरे ऐसे भी होते हैं, जो दूसरों से कम-से-कम अपेक्षा रखते हैं और अधिक-से-अधिक सहयोग करना चाहते हैं। सर्वत्र उदारता के मूल में प्रेम व करुणा का ही हाथ रहता है। जितना-जितना व्यक्ति में यह भाव बढ़ता जाता है, उतना-उतना उसका ध्यान अपने से हटने लगता है तथा दूसरे पर टिकने लगता है। जब व्यक्ति दूसरे को अपने से अधिक महत्त्वपूर्ण समझता है, तो दूसरे के दुःख, या दूसरे की आवश्यकता पर तत्काल ध्यान जाता है। और उस अवस्था में जो उसके पास है उसी से उसकी सेवा करना चाहता है। किसी के पास लाखों रुपये हैं, उनमें से सौ-दो-सौ रुपये किसी को दे देता है। दूसरे के पास सौ-दो-सौ ही हैं- वे ही अर्पित कर देता है। श्री महाराज कहते हैं- 'यही है गरीबी में उदारता'।

एक और उदाहरण लीजिए- एक भिखारी कटोरा लिये भीख माँग रहा है। राजा का उधर से गुजरना हुआ कि राजा ने उसके कटोरे में चार आना डाल दिये। इतने में एक कोई दूसरा भिखारी आ निकला और उसने उस भिखारी के सामने हाथ फैला दिया- भिखारी ने कटोरे सहित चार आने उसको दे दिये। यह है गरीबी में उदारता। राजा ने तो चार आने दिये, इसने चार आने भी दे दिये और कटोरा भी।

महाभारत में इसका तेजस्वी उदाहरण मिलता है- जबकि कई दिन बाद एक ब्राह्मण परिवार को भोजन मिला। अकस्मात् उसी समय एक भूखे व्यक्ति का आना हो गया। उस ब्राह्मण परिवार के चार सदस्य थे, सबने अपना-अपना हिस्सा बारी-बारी करके भूखे अतिथि को प्रसन्नता-पूर्वक खिला दिया। बोझ मानते हुए या दुःखी होते हुए नहीं, बल्कि आनन्द के साथ। वस्तुतः यह हृदय का एक महान् सद्गुण है। कोमलता (Humility) की पराकाष्ठा है। ऐसा हृदय अहित व दुरित से स्वतः ही निवृत्त हो जाता है, क्योंकि अहित करने के लिए हृदय का कठोर होना आवश्यक है। कोमल हृदय का तो भला करना स्वभाव ही हो जाता है।

संकट में निर्भयताः- संकट में आत्मनिष्ठ, प्रपंच में पूर्णप्रज्ञ प्रशान्त, प्रतिकूलताओं में समाहित, संकट में समाधिस्थ, संकट में निर्भयता, ये सभी शब्द मूल रूप से एक ही अर्थ को प्रकट कर रहे हैं कि जिस प्रकार अनुकूलताओं में व्यक्ति का मन शान्त व समाहित होता है, उसी प्रकार प्रतिकूलता में भी रह सके तो समझना चाहिए कि जीवन यात्रा की दिशा ठीक है। संकट, प्रतिकूलता और प्रपंच व्यक्ति के लिए परीक्षा की घड़ी होते हैं। उस अवस्था में ही व्यक्ति की साधना का निश्चय होता है कि वह कहाँ खड़ा है? कितनी प्रगति हुई है? श्री महाराज एक बात और कहा करते हैं कि आचरण के क्षेत्र में शत-प्रतिशत अंक लेने पर ही उत्तीर्णता मानी जाती

है। सो यहाँ पर या तो व्यक्ति उत्तीर्ण होता है या अनुत्तीर्ण बीच की और कोई सीमा रेखा नहीं है। संकट के समय यदि व्यक्ति का चित्त थोड़ा-सा भी डाँवाडोल हो जाता है तो यही समझना चाहिए कि वह असफल हो गया।

अनुकूल समय तो किसी साधक के लिए वैसा ही होता है जैसा कोई परीक्षार्थी या कोई मल्ल अपनी तैयारी कर रहा होता है। यह कहना अनावश्यक है कि तैयारी जितनी अच्छी होगी, परीक्षा देने में सुविधा उतनी अधिक होगी। एक मल्ल बिना ही व्यायामादि और स्वास्थ्य के नियमों का आचरण किये, यदि अखाड़े में उतर पड़ता है, तो विजय के लिए क्या आशा की जा सकती है? मन को लक्ष्य करके ही सजगता व शान्त ध्यान आदि साधनों के द्वारा व्यक्ति को अपनी सत्ता की गहराई में बार-बार उतरना होता है। विषम परिस्थितियों के उपस्थित होने पर मन को कैसे शान्त रखा जाता है, यह इस विद्या को अधिगत करने पर ही आशा की जा सकती है कि व्यक्ति संकट के समय भी निर्भय बना रहे।

जैसे दूध दुहने की या नदी में तैरने की एक कला होती है। जो लोग इन कलाओं में पारंगत हो जाते हैं उन्हें इन कामों को करने में कोई कठिनाई नहीं होती। बाकी लोगों के लिए इस प्रकार के सरल कार्य भी असम्भव जैसे प्रतीत होते हैं। सतत व्यायाम के अभ्यास के द्वारा जैसे व्यक्ति अपनी क्षमताओं को धीरे-धीरे बढ़ाता चला जाता है। माँसपेशियाँ सर्वथा उसके अनुकूल हो जाती हैं। उसी प्रकार मन को भी प्रशिक्षित किया जाता है। नट लोग एक पतले तार पर चलने जैसा कठिन कार्य अभ्यास बल से ही तो कर पाते हैं। आचरण के क्षेत्र में भी अभ्यास का यही महत्त्व है। श्री महाराज तो अभ्यास को इतना महत्त्व देते हैं कि उनका यहाँ तक कहना है-'यदि अभ्यास अपूर्ण है तो कोई भी ऊँची से ऊँची जानकारी किसी समस्या के समाधान में कुछ भी मदद नहीं कर सकती, और यदि अभ्यास पूर्ण है तो फिर तथ्यात्मक ज्ञान का वस्तुतः कोई अर्थ नहीं रह जाता'। सो वे कहते हैं- 'ज्ञान का अर्थ जानना नहीं, बल्कि वैसा हो जाना है'।

वे एक बात और भी कहते हैं- 'आवश्यक नहीं कि विचारों की भूल का तत्काल पता लग जाए, पर आचरण की भूल उसी समय प्रकट हो जाती है'। सो आचरण को भूल-रहित बनाने का श्री महाराज के अनुसार एक ही अनन्य साधन है- 'अभ्यास'। मन की शान्त स्थिति को बनाए रखने के लिए जो आन्तरिक प्रयत्न किया जाता है उसी का नाम है 'अभ्यास'। महाराज का कहना है कि सत्य को बुद्धि के द्वारा समझ लेना कोई कठिन काम नहीं है, उस पर निरन्तर चलना या चलते रहना, यही आवश्यक, मुख्य व असाधारण कार्य है। इस विषय में आश्रम में एक शिलालेख भी हैं-'अभ्यास के बिना सिद्धान्त एक विडम्बना है'। प्रायः व्यक्ति विभिन्न सिद्धान्तों को समझने में जितना व्यग्र रहता है उतना उस जाने हुए सत्य का अभ्यास करने के लिए नहीं होता।

मन को निरन्तर साधने का अभ्यास ही तो 'साधना' है, जिसके द्वारा प्रपंच में शान्त रहा जा सकता है। यही वह प्रमुख व अन्तरंग साधन है जिसके बल पर आज तक ज्ञानी-सन्त-महात्मा-विप्र-ऋषि-महर्षि-योगी-तपस्वी जनों ने महान् पद को प्राप्त करके मनुष्य जीवन की उच्चतम सम्भावनाओं को चरितार्थ करके दिखाया है।

स्वाध्याय-सत्संग, उच्च-उद्देश्य, कार्मिक-व्यस्ततायें व्यक्ति की मदद तो करती हैं, पर उस साधन की अपेक्षा ये सब बहिरंग ही हैं। इस प्रकार मन को साधने की विद्या में ही समस्याओं का अन्तिम समाधान छिपा हुआ है। महाराज ऐसे सन्तों को अपनी प्रणामाजंलि भेंट करते हुए कहा करते हैं- 'हम तो उन सन्तों के दास जिन्होंने मन साध लिया'। यों तो मन को साधने के लिए साधकों ने अपने-अपने ढंग से विभिन्न आविष्कार किये हैं, पर योग-सूत्रकार पंतजलि ने दो प्रमुख साधनों का निर्देश किया है- या तो व्यक्ति नेति-नेति के द्वारा अपने-आपको पहचाने कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं पंचभूत नहीं हूँ, मैं पंचतन्मात्र नहीं हूँ, मैं इन्द्रियाँ नहीं हूँ, मैं मन भी नहीं हूँ और मन की वृत्तियाँ भी नहीं हूँ, मैं सद्-असद् भावनायें भी नहीं हूँ, मैं बुद्धि भी नहीं हूँ, मैं वह अंहकार भी नहीं हूँ जिसके द्वारा व्यक्ति अपने-आपको, 'मैं ऐसा हूँ, मैं वैसा हूँ' इस रूप में समझता है, इन सबका निषेध करने पर जो बचा रहता है- वह पूर्ण चिन्मय रूप ही मेरा सच्चा रूप है।

एक तो इस स्वरूप प्राप्तिरूप आश्रय के द्वारा व्यक्ति प्रकृति के सूक्ष्म व जटिल बन्धनों को तोड़ सकता है। बन्धनों के टूटते ही व्यक्ति अभय हो जाता है। जब तक व्यक्ति बन्धन में होता है, तभी तक किसी प्रकार का 'भय' उसका पीछा करता है। भय-बाधा-कठिनाईयाँ-अशान्ति-दुःख, ये सब मन व बुद्धि के अविवेक की ही तो उपज हैं। सो मन व बुद्धि को ज्ञान से आलोकित रखने के लिए 'प्रकृति-पुरुष विवेक' एक उपाय है। या फिर दूसरा उपाय है मन को उच्चतर शक्ति के प्रति पूर्ण समर्पित रखना, भक्ति से सदा ही लबालब भरे रहना, अपनी समस्त शारीरिक-वाचिक क्रियाओं, मन के विचारों व हार्दिक भावनाओं की उस परम शक्ति के प्रति आहुति देते रहना- इस भक्तिरूप उपाय से भी मन शान्त हो

जाता है। सम्पूर्ण संसार भी यदि उसके विरोध में खड़ा हो जाए, तो भी वह अपने आप को पूर्ण सुरक्षित समझता है।
कैसी भी विषम से विषम घटनाओं व परिस्थितियों का भी वह हँसते-हँसते स्वागत करता है। घोर अपमान, तिरस्कार व घृणा से सर्वथा अलिप्त रहता है। किसी के द्वारा उस पर क्रोध की दनादन वर्षा किये जाने पर कछुए की भाँति अपने आप को अन्दर खींच लेता है। विरोधियों के द्वारा कष्ट पहुँचाये जाने पर कभी भी प्रतिहिंसा व प्रतिशोध का भाव नहीं लाता। चारों तरफ शोक व मोह का सागर उमड़ पड़ने पर भी ऐसी मुक्ति प्राप्त कर लेता है कि उस शोकसागर या मोहसागर में अपने-आपको डूबने नहीं देता। स्वामी दयानन्द ने भी अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में निज अनुभव बल से उपासक की महती उपलब्धि का इन्हीं शब्दों में वर्णन किया है कि 'कष्टों का साक्षात् पहाड़ टूट पड़ने पर भी वह शान्ति से सह सकने में समर्थ हो जाता है'। वस्तुतः केवल एतद्विषयक संकल्प मात्र कर लेने से अथवा किसी महापुरुष का प्रवचन सुन लेने से या ऊँचे-से-ऊँचे शास्त्रों का अध्ययन-मनन कर लेने मात्र से 'प्रतिकूलताओं में प्रशान्त' नहीं रहा जा सकता। इसके लिए मन का सतत जागरूक रहना परम आवश्यक है।

एकान्त में संयमः- व्यक्ति समूह में जो आचरण करता है, उसमें मान-अपमान का भाव बीच में आ जाने के कारण बाह्य दिखावा अधिक विद्यमान रहता है। अन्दर से व्यक्ति चाहे संयमी न भी रहे, पर बाहर से संयम का प्रदर्शन करना होता है। कारण? समाज के द्वारा दण्डित होने का भय व पुरस्कार का प्रलोभन बराबर ही उसके समक्ष बना रहता है। अन्दर-अन्दर कोई भी कामना अपनी जड़ जमाए रहती है, प्रलोभन व्यक्ति को खींचता रहता है, पर सामाजिक भय के कारण व्यक्ति शरीरतः वैसा कर नहीं सकता और इसलिए बाह्य दिखावा मात्र करता रहता है अर्थात् उस अवसर पर व्यक्ति का मन तो असंयमी हो जाता है, पर शरीर को व्यक्ति जैसे-तैसे वैसा करने से रोके रखता है। महाराज कहते हैं कि यदि व्यक्ति एकान्त में संयमी है तो ही समझना चाहिए कि व्यक्ति संयमी है।
व्यक्ति के मन के संयम-असंयम की परीक्षा तब होती है, जब उसे किसी प्रकार का बाह्य भय नहीं होता। सर्वथा एकान्त निर्जन स्थान में भी किसी को यौवन का सौन्दर्य किन्चित भी आकृष्ट न कर सके फिर कहीं इसी प्रकार प्राप्त हुए सोने का आकर्षण उसे लुभा न सके तो समझना चाहिए कि अमुक व्यक्ति ने अपने मन पर संयम कर लिया है। कहने का भाव यह है कि व्यक्ति बुराई से या तो आन्तरिक धर्मनिष्ठा और ईश्वर विश्वास के द्वारा रुकता है, अथवा बाह्य सामाजिक मर्यादाओं के द्वारा अर्थात् किसी बाह्य भय के द्वारा। एकान्त में संयमी वे ही हो सकते हैं जिनका अपनी अन्तःसत्ता में पूर्ण विश्वास हो। अपनी अन्तरात्मा में जिन्होंने सत्य-असत्य को पहचान लिया हो। वस्तुतः इस स्थिति को प्राप्त हुआ व्यक्ति सर्वथा सर्वदा निर्भय हो जाता है। सरलार्थ यह है- एकान्त में संयमी होना देवत्व है। बाह्य भयवश अपने आपको किसी बुराई से बचाना सामान्य मनुष्यत्व है। किन्तु साधक का तो लक्ष्य यही है कि मनुष्यत्व से देवत्व की ओर सतत आरोहण करता रहे।

- पूज्य स्वामी सोमानन्द जी महाराज
(साभार-जीवन का समाधान)

धर्म और साम्प्रदायिकता

(सत्यार्थ प्रकाश के आलोक में)

धर्म और मत

सत्यार्थ प्रकाश में धर्म और धर्म से जुड़े शब्द (धर्मात्मा, धर्मयुक्त आदि) सहस्रों की संख्या में प्रयुक्त हुए हैं। यही स्थिति 'मत'शब्द की भी है- मत-मतान्तर, मतवादी, मतवाले आदि।

स्वामी जी ने 'धर्म' का प्रयोग निम्नलिखित अर्थों में किया है-

१.नैतिक मूल्यों के अर्थ में-

पक्षपातरहित न्यायाचरण[१], सत्यभाषणादि[२], विद्यादि का ग्रहण[३], ब्रह्मचर्य[४], परोपकार[५], सत्यव्यवहार[६], सत्य का ग्रहण[७], सत्संग[८], पुरुषार्थ[९] तथा पूर्ण युवावस्था में विवाह[१०] आदि के आचरण को सत्यार्थ प्रकाश में अनेकशः धर्म कहा गया है।

इसके अतिरिक्त धर्म के लक्षण के प्रसंग में नैतिक मूल्यों को ही धर्म निरूपित किया गया है। यथा-'धैर्य, क्षमा (मानापमान, हानि-लाभ, निन्दा-स्तुति में सहनशील रहना), दम (मन को धर्म में प्रवृत्त किन्तु अधर्म से रोक देना), अस्तेय-चोरीत्याग (छल-कपट, विश्वासघात या वेदविरुद्ध उपदेश से परपदार्थ के ग्रहण का त्याग),शौच (राग-द्वेष, पक्षपात् छोड़ के भीतर की तथा जल मृतिका मार्जन आदि से बाहर की पवित्रता रखनी), इन्द्रियनिग्रह (इन्द्रियों को अधर्माचरण से रोककर धर्म ही में सदा चलाना) धीः (मादक द्रव्य, बुद्धिनाशक पदार्थ, दुष्टों का संग, आलस्य, प्रमाद को छोड़कर श्रेष्ठ पदार्थों के सेवन, सत्पुरुषों के संग तथा योगाभ्यास से बुद्धि को बढ़ाना), विद्या (पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का यथार्थज्ञान और उनसे यथायोग्य उपकार लेना), सत्य(आत्मा, मन, वाणी और कर्म में एकरूपता तथा जो पदार्थ जैसा हो उसको वैसा ही समझना, बोलना तथा करना), अक्रोध (क्रोधादि दोषों को छोड़कर शान्त्यादि गुणों का ग्रहण करना धर्म के लक्षण हैं। इस दशलक्षण युक्त...... धर्म का सेवन चारों आश्रमवाले करें।'[११] (सत्यार्थ प्रकाश, पंचम समुल्लास)

२. परमेश्वरोक्त तथा वेद-शास्त्रविहित अर्थों में-

ईश्वराज्ञा वेदों से अविरुद्ध है उसको धर्म और.... ईश्वराज्ञाभंग वेदविरुद्ध है, उसको अधर्म मानता हूं।[१२] हे परमेश्वर!.......जो आपकी आज्ञा है वही धर्म, और जो उससे विरुद्ध वही अधर्म है।[१३] वेद, वेदानुकूल आप्तोक्त मनुस्मृत्यादिशास्त्र, (सनातन अर्थात् वेद द्वारा परमेश्वर - प्रतिपादित कर्म) सत्पुरुषों का आचार और जिसको आत्मा चाहता है (अपने आत्मा में प्रिय जैसाकि सत्यभाषण)। ये चार धर्म के लक्षण हैं। अर्थात् इन्हीं से धर्माधर्म का निश्चय होता है[१४] जो धर्म के ज्ञान की इच्छा करें, वे वेद द्वारा धर्म का निश्चय करें। क्योंकि धर्माधर्म का निश्चय विना वेद के ठीक ठीक नहीं होता[१५] वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित आचार धर्म है।[१६] वेद प्रतिपादित कर्म को धर्म मानने की परम्परा प्राचीन काल से है तथा यह शास्त्रीय शैली है। जैसे-'चोदनालक्षणोअर्थोधर्मः(मीमांसा सूत्र), 'वेद प्रतिपाद्यः प्रयोजनवदर्थो धर्म इति' (अर्थ संग्रह)।

वेदविहित से तात्पर्य यह लिया जाता है कि श्रौत गृह्य सूत्रोक्त तथा स्मृतियों में विहित कर्म यदि वेद के विरुद्ध हों तो उसकी उपेक्षा करे अर्थात् उसे प्रामाणिक न माने। किन्तु इन शास्त्रों में प्रतिपादित कर्मों का यदि वेद में विरोध न हो तो उसकी वेदानुकूलता का अनुमान करना चाहिए। इस संबंध में मीमांसा दर्शन का प्रसिद्ध सूत्र है-'विरोधे त्वनपेक्ष्यं स्यादसति ह्यनुमानम्'(मीमांसा सूत्र १।३।२)।

३. एक और परस्पर अविरोधी अर्थों में-

स्वामी दयानन्द सरस्वती यह भी मानते हैं कि धर्म एक होता है अनेक नहीं। तथा धर्म वह है जिसका कोई विरोधी न हो। स्वामी जी के शब्द हैं- 'धर्म सब एक होता है वा अनेक? जो कहो अनेक होते हैं, तो एक दूसरे के विरुद्ध होते हैं वा अविरुद्ध? जो कहो कि विरुद्ध होते हैं तो एक विना (अर्थात् अतिरिक्त) दूसरा धर्म नहीं हो सकता और जो कहो कि अविरुद्ध हैं, तो पृथक्-पृथक् होना व्यर्थ है। इसलिए धर्म.... .एक ही है अनेक नहीं।'(सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास) जिस बात में सहस्र एकमत हों, वह ग्राह्य है। और जिसमें परस्पर विरोध हो, वह कल्पित झूठा अधर्म अग्राह्य है। (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)

निष्कर्ष- ध्यान देने योग्य यह है कि उपर्युक्त तीन अर्थों में प्रयुक्त 'धर्म' परस्पर असम्बद्ध या विरुद्ध नहीं है। क्योंकि स्वामी जी के अनुसार जो ईश्वर की आज्ञा है उसी का वेद में विधान है, ईश्वर की वाणी वेद है, वेद परमेश्वर- कर्त्तृक है या अपौरुषेय है। वेद में नैतिक मूल्यों और सदाचार के मानकों को ही कर्तव्य के रूप में उपदिष्ट किया गया है तथा वे नैतिक मूल्य या सदाचार देश-काल के बन्धन में आवृत या विच्छिन्न नहीं हैं। सभी देशों में या कालों में जो एक सा आचरणीय कर्तव्य, सत्यभाषण आदि है, वही धर्म है और उसका कोई विरोधी नहीं है। धर्म एक है। जो धर्म हमारे लिए आचरणीय है वही दूसरों के लिए भी करणीय है। स्वामी जी लिखते हैं-'काल निष्क्रिय होने से धर्माधर्म के करने में साधक बाधक नहीं है।' (एकादश समुल्लास)। अर्थात् कलियुग में अधर्म तथा सत्ययुग में धर्म की अधिकता का कारण युगविशेष को मानना तर्कसंगत नहीं है। जो मिथ्या बातें हैं उन उनका खण्डन किया गया है।

.......एकादश समुल्लास में आर्यावर्तीय मत-मतान्तरों का खण्डन-मण्डन विषय। द्वादश समुल्लास में चारवाक बौद्ध और जैनमत का विषय। त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत का विषय। चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों के मत का विषय(भूमिका सत्यार्थ प्रकाश) उन सब मतों में ४ चारमत, अर्थात् जो वेद विरुद्ध पुराणी, जैनी, किरानी और कुरानी सब मतों के मूल हैं। अब इन चारों की शाखा एक सहस्र से कम नहीं हैं। (अनुभूमिका १, सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्ध)।

मत के लिए ही सम्प्रदाय का प्रयोग

सब सम्प्रदायों के उपदेशों को कोई राजा इकट्ठा करे, तो एक सहस्र से कम नही होंगे। परन्तु इनका मुख्य तो पुरानी, किरानी, जैनी और कुरानी चार ही हैं। (एकादश समुल्लास) ऊपर विस्तार से विश्लेषित धर्म और मत के संदर्भ में निम्नलिखित अन्तर स्पष्ट है-

१. धर्म एक है मत अनेक हैं।
२. धर्म वेदशास्त्र प्रतिपादित है, मत व्यक्ति विशेष (गुरु, आचार्य, पैगम्बर) के द्वारा प्रवर्त्तित पंथ है।
३. धर्म परस्पर अविरुद्ध होता है जबकि मत-मतान्तर परस्पर विरोधी होता है।
४. धर्म में पूर्ण सत्य होता है (सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए- आर्य समाज का पांचवां नियम) जबकि मत में सत्य- असत्य दोनों होता है। 'जो जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं उनका स्वीकार करके जो जो मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं उन-उनका खण्डन किया है।' (सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका)

धर्माचरण से मनुष्य को अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि (इस लोक तथा परलोक में कल्याण) होती है-'यतोभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः'(वैशेषिक दर्शन १।१।२) मत-मतान्तर का अनुयायी अविद्या एवं भ्रम में पड़कर मनुष्य जन्म व्यर्थ गंवाता है।

अविद्यायामन्तरे वर्त्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः।
जंघन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः।।
मुण्डकोपनिषद् २।८

विशेष- सत्यार्थ प्रकाश में 'मत' शब्द विचार और सिद्धान्त के अर्थ में भी प्रयुक्त है। इस अर्थ में इस शब्द के प्रयोग का कारण मत शब्द जिस धातु से बना है, उसका धात्वर्थ है-मन ज्ञाने (दिवादि), मनु अवबोधने (तनादि)। स्वामी दयानन्द के निम्न उद्धरण 'मत'शब्द के 'विचार' और 'सिद्धान्त' अर्थ को दर्शाते हैं-

१.चौदह समुल्लासों के अन्त में आर्यों के सनातन वेदविहित मत की विशेषतः व्याख्या लिखी है। (भूमिका पृष्ठ ५) यह संकेत-'स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश' की ओर है।

२.प्रश्न- तुम्हारा मत क्या है?

उत्तर- वेद। ......हमारा मत वेद है। ऐसा ही मानकर सब

मनुष्यों को विशेषतः आर्यों को ऐकमत्य होकर रहना चाहिए। (तृतीय समुल्लास)

३. और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है? तो यही उत्तर देना चाहिए कि हमारा मत वेद अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है, हम उसको मानते हैं। (सप्तम समुल्लास)

'मत' शब्दकोश ग्रन्थों में दो अर्थों में विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

१.सिद्धान्त, उसूल, पंथ, धर्ममत विश्वास।

२.चिन्तन, विचार, सम्मति, विश्वास, पर्यवेक्षण (द्रष्टव्य-'वामन-शिवराम आप्टे-संस्कृत हिन्दीकोश,' पृ.७६४)

कहना न होगा कि स्वामी जी ने इन दोनों अर्थों में 'मत'शब्द का प्रयोग किया है।

१. क. सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ६५४ स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश। ख. पृष्ठ ७०२ (द्वादश समुल्लास), ग. पृष्ठ २११(पंचम समुल्लास)।
२. पृष्ठ, ६०७ (एकादश समुल्लास), ७०२ (द्वादश समुल्लास), ४८८(एकादश समुल्लास) आदि।
३. पृष्ठ, ६०७ (एकादश समुल्लास)
४. पृष्ठ ६०७(एकादश समुल्लास), ७०२ (द्वादश समुल्लास)।
५. पृष्ठ ५६६(एकादश समुल्लास)।
६. पृष्ठ ६०७(एकादश समुल्लास)।
७. पृष्ठ ६१(तृतीय समुल्लास)।
८. पृष्ठ ६०७(एकादश समुल्लास)।
९. वही।
१०. वही।
११. धृतिःक्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। (मनुस्मृति ६।९२)
१२. सत्यार्थ प्रकाश, पृष्ठ ६५४ (स्वमन्तव्यामन्तव्य)।
१३. वही, पृष्ठ २८ (प्रथम समुल्लास)।
१४. श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्यं लक्षणम् ।। उद्धृत-सत्यार्थ प्रकाश, पृष्ठ ६१ (तृतीय समुल्लास), (मनु.२।१२)।
१५. धर्मजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः (मनु. २।१३) उद्धृत वही, पृष्ठ ६१
१६. आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च (मनु. १।१०८)

- डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री
अमेठी

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

भारतीयता एवं वैदिक धर्म के सच्चे संदेश वाहक स्वामी पूर्णानंद जी सरस्वती

भारत माता की पराधीनता की बेड़ियों की झनझनाहट को सुनकर मां भारती के जिन हजारों ज्ञात तथा अज्ञात पुत्रों ने पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ी हुई तथा छटपटाती हुई माता को मुक्त करने का दृढ़ संकल्प किया था उनमें से स्वामी पूर्णानंद जी सरस्वती का नाम भी अपना विशेष महत्व रखता है। उनकी गणना स्वामी दयानंद सरस्वती जी की वैदिक परंपराओं के निर्भीक व सच्चे संदेशवाहक के रूप में समस्त आर्य जगत् में होती है।

स्वामी जी का संन्यास पूर्व नाम पंडित पूर्ण चंद्र आर्य था । उनका जन्म १३ मार्च सन १९०० ई० में बागपत जिले के बूढ़पुर नामक ग्राम में एक किसान परिवार में हुआ था।

स्वामी जी सन्१९२० में मेरठ से एस एल सी की परीक्षा उत्तीर्ण कर पुलिस सब इंस्पेक्टर पद के लिए चुने गए। परंतु सन् १९२१ में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से प्रभावित हो इस पद को ठुकरा दिया तथा सहर्ष कारावास जाने का निर्णय कर स्वाधीनता संघर्ष के कठिन मार्ग पर चलने का निर्णय लिया तथा साबरमती आश्रम में बापू के चरणों में बैठकर जीवन को राष्ट्र के लिए समर्पित करने का महाव्रत लिया।

स्वामी जी ने मेरठ क्षेत्र में ही नहीं अपितु हरियाणा व पूर्व पंजाब प्रांत में स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगा दी । १९२३ में लाहौर आर्य समाज जो कि उस समय उत्तर भारत की राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र था उसी को अपना केंद्र बना आर्य समाज का कार्य प्रारंभ किया। स्वामी श्रद्धानंद जी, भाई परमानंद जी, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, महाशय कृष्ण जी, व स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी जैसे महान् नेताओं के सानिध्य में रहकर राष्ट्र की निस्वार्थ सेवा में जुट गए ।

सन्१९२५ में उनका विवाह श्रीमती यशोदा देवी से हुआ तथा उन्हें तीन सुपुत्र यशोवर्धन शास्त्री , वेदप्रकाश तोमर, डा. शिवराज व एक सुपुत्री शकुंतला प्राप्त हुई।

१९३० में गांधी जी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया तथा उन्हें ग्राम किशनपुर बराल में गिरफ्तार कर मेरठ जेल भेज दिया जहाँ स्वाभिमानवश जेलर को सेल्यूट करने से मना मरने पर उन पर अत्याचार किये गए तथा उनके भूखहड़ताल करने पर मेरठ में विद्रोह न फैले उन्हें यहाँ से मैनपुरी जेल भेज दिया गया तथा गांधी - इरविन पैक्ट में १० माह के कारावास के बाद ही उन्हें रिहा किया गया।

किशनपुर बराल में पंडित जी की गिरफ्तारी के पश्चात् क्षेत्र सहयोगी हतोत्साहित हो गए, तब उनकी वृद्ध माता, धर्मपत्नी तथा परिवार की अन्य महिलाओं ने छोटे - छोटे बच्चों को गोदी में लेकर गांव गांव में दौरा कर सत्याग्रह का संदेश पहुँचाया तथा एक विशाल जनसमूह का नेतृत्व करते हुए अपने को गिरफ्तारी के लिए प्रस्तुत किया। आजादी की लड़ाई में स्त्री आन्दोलन की यह इस क्षेत्र की पहली घटना थी।

१९३९ में हैदराबाद के निजाम द्वारा हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध जींद रियासत से सौ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर वहाँ आंदोलन किया तथा गिरफ्तार कर लिए गए व औरंगाबाद जेल में १ वर्ष का सश्रम कारावास काटा। इस समय एक मर्मस्पर्शी घटना भी प्रकाश में आती है। जब इस आंदोलन की जिम्मेदारी पंजाब प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें दी तब उनके सबसे छोटे पुत्र बालक शिवराज की तबीयत काफी नाजुक थी उनका बचना भी असंभव लग रहा था । इष्ट मित्रों व परिवार वालों ने काफी समझाया कि वह हैदराबाद ना जाएं , परंतु स्वामी जी ने उत्तर दिया कि ‘देश और धर्म की रक्षा के लिए मैं अपनी अमूल्य से अमूल्य वस्तु भी न्योछावर कर सकता हूं, और दृढ़ निश्चयी हो आंदोलन

के लिये चले गए। ऐसे उदाहरण स्वतंत्रता इतिहास में विरले ही मिलते हैं।

१९३१-३२ में कश्मीर के कुख्यात मजहबी मुस्लिम नेता शेख अब्दुल्लाह तथा मुस्लिम कान्फ्रेंस के कार्यकर्ताओं द्वारा हिंदू धर्मावलंबियों पर अत्याचार के विरुद्ध वहां की जनता में आत्मविश्वास जगाने के लिये कश्मीर गए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उनके इस कार्य की मुक्तकंठ से प्रशंसा की तथा सन्१९४४ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हें पुनः हैदराबाद में वैदिक धर्म प्रचार के लिए भेजा, परन्तु उन्हें रियासत के बाहर ही गिरफ्तार कर बदरे -रियासत घोषित कर दिया।

स्वामी पूर्णानंद जी शुद्धि आंदोलन के प्रबल समर्थक थे, तथा उन्होंने ग्राम जिवाना गुलियान, लोहारा व गुड़गांव जिले के मेवात प्रांत में शुद्धि आंदोलन को तेजी से चलाया। आर्य जगत् के विख्यात नेता महाशय कृष्ण जी ने एक बार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान के रूप में स्वामी जी की प्रशंसा में कहा कि 'हमें गर्व है कि पंडित लेखराम जी जैसी महान् परंपरा के उपदेशक पंडित पूर्णचंद्र आर्य हमारी आर्यसमाज में हैं।'

१९४८ में कांग्रेस दल की तुष्टिकरण की नीतियों के विरुद्ध एक जनसभा को संबोधित करते हुए गिरफ्तार कर लिए गए तथा बनारस जेल में २ मास की कारावास की सजा काटी। उसी समय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी जी गंभीर बीमार पड़ गयीं तथा उनकी उचित सेवा सुश्रुषा ना होने के कारण उसी दौरान उनका देहावसान हो गया।

देश धर्म पर जब भी कोई आंच आई तो स्वामी जी ने उत्साह पूर्वक बढ़-चढ़कर आंदोलनों में भाग लिया। सन्१९५७ के अंदर पंजाब में हिंदी सत्याग्रह व १९६७ में प्रसिद्ध गोरक्षा आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया।

१८ जुलाई सन् १९७१ में उन्होंने जनता वैदिक इंटर कालेज बड़ौत के विशाल प्रांगण में चौधरी चरण सिंह जी (पूर्व प्रधानमंत्री भारत सरकार) की अध्यक्षता में आर्य जगत् के प्रकांड विद्वान् स्वामी रामेश्वरानंद जी सरस्वती (गुरुकुल घरौंडा) से संन्यास की दीक्षा ली तथा स्वामी पूर्णानंद सरस्वती के रूप में विख्यात हुए।

स्वामी जी का अनेक भाषाओं के ऊपर पूर्ण अधिकार था, हिंदी, संस्कृत, अरबी, फारसी,पंजाबी व आंग्ल भाषा का उन्हें अच्छा ज्ञान था। वेद, उपनिषद् व सभी भारतीय दर्शन, गीता, रामायण व महाभारत आदि ग्रंथों का उन्हें गंभीर अध्ययन था, इसके साथ ही इस्लाम व ईसाईयत धर्म साहित्य के ऊपर भी उनका उतना ही विश्लेषणात्मक अध्ययन था स्वामी जी ने वैदिक धर्म के प्राचीन ऋषियों द्वारा निर्धारित रीति पर सारा जीवन व्यतीत किया, स्वामी जी वैदिक धर्म के सच्चे अनुयाई थे, राष्ट्र की निष्काम भावना से सेवा करने वाले ऐसे व्यक्तित्व कम ही मिलते हैं। संन्यास आश्रम में रहते हुए उन्होंने अपना सारा समय अध्ययन, चिंतन व लिखने में लगा दिया। जहां भी वैदिक सिद्धांतों के विपरीत बातें पता चली उन्होंने तुरंत अपनी लेखनी उठा ली । इसी क्रम में उन्होंने कई पुस्तकें लिखी जिनमें प्रमुख हैं ।

१) वृक्ष जीवधारी है

२) मानव शरीर और जीवात्मा

३) पोल प्रकाश

४) योगी का आत्मचरित्र एक षड्यंत्र है

स्वामी पूर्णानंद सरस्वती ने २० दिसंबर १९८५ को अंतिम संदेश देते हुए कहा कि 'ऋषि दयानंद जी महाराज के बताए रास्ते पर चलना'। तत्पश्चात् ओ३म् का उच्चारण करते हुए महाप्रयाण किया ।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि स्वामी जी की जीवन कहानी, भारतीय स्वतंत्रता की इतिहास गाथा ही है। भारत मां ऐसे पुत्रों को जन्म देकर गौरवान्वित महसूस करती है, आइये हम सब ऐसी अमर आत्मा के जीवन से प्रेरणा लें तथा उन्हीं की भांति अपने जीवन को राष्ट्र व वैदिक धर्म की रक्षा के लिए होम करने का संकल्प करें।

- डॉ. वीरोत्तम तोमर
मेरठ

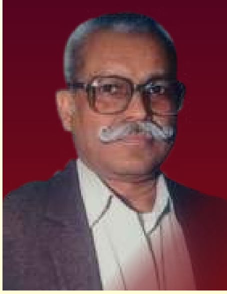

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्री घनश्याम जी शर्मा सेवानिवृत्त (आर. ए. एस.) जयपुर ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है। अनेकशः धन्यवाद।

आर्य समाज स्थापना दिवस पर समस्त हिंदू भाइयों के चिन्तन हेतु

आर्य समाज हिंदू विरोधी नहीं ...

- क्योंकि, आर्य समाज ये नहीं मानता कि, श्रीकृष्ण माखनचोर थे, गौएँ चुराते थे, गोपियों संग रास रचाते थे, राधा संग प्रेम प्रसंग में लिप्त थे, कुब्जा दासी से समागम किए थे और ईश्वर का अवतार थे।

बल्कि ये मानता है कि, वे जन्म से लेकर ४८ वर्ष तक ब्रह्मचारी थे, एक रुक्मणी से विवाह करके भी उसके साथ विष्णु पर्वत पर उपमन्यु ऋषि के आश्रम में १२ वर्ष तप करके अपने समान तेजस्वी पुत्र प्रद्युम्न को पैदा किया, योगेश्वर होने से वे नित्य ईश्वरोपासना, प्राणायाम, संध्या, अग्निहोत्र आदि करते थे, अनेकों प्रकार की युद्ध कलाओं में दक्ष थे, उनका प्रिय शस्त्र सुदर्शन चक्र था, महान् विचारक थे, अद्वितीय योद्धा थे, भारतवर्ष के समस्त गणराज्यों को यादवों के संघर्ष तले एक करने वाले महान् राजनीतिज्ञ थे ।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्य समाज रामचरितमानस के आधार पर ये नहीं मानता कि, हनुमान बंदरमुखी थे, उन्होंने पूँछ से लंका दहन किया ।

बल्कि वाल्मिकि रामायण के आधार पर ये मानता है कि, हनुमान जी दक्षिण भारत की क्षत्रिय शाखा जो वन में बसती है, उसमें से अखंड ब्रह्मचारी, महाबली, व्याकरण के धुरंधर विद्वान्, वेदों के ज्ञाता थे ।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्य समाज गरुड़, अग्नि, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भागवत आदि १८ नवीन पुराणों को नहीं मानता क्योंकि इनमें परस्पर विरोधाभास, देवी देवताओं के बारे में अभद्र अश्लील कथाएँ वर्णित हैं, अपने अपने देवों की स्तुति और अन्यों की निंदा है, जिन्हें व्यासकृत माना जाता है। जबकि वे पक्षपातियों के द्वारा समय समय पर रचे हुए कपोल कल्पित ग्रंथ हैं।

बल्कि आर्यसमाज मानता है कि, चारों वेदों के चार ब्राह्मणग्रंथ (ऐतरेय, तैत्तरीय, शतपथ, गोपथ) को ही पुराण कहते हैं -जिनमें आश्वलायन, याज्ञवल्क्य, जैमिनी आदि ऋषियों का प्रमाणिक इतिहास है । (ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों के व्याख्यान ग्रन्थ भी हैं - सं.)

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्य समाज ये नहीं मानता कि, हिंदुओं के सारे संस्कृत शास्त्र प्रमाणिक हैं ।

बल्कि मानता है कि, केवल वेद और वेद के सिद्धांतों के अनुकूल चलने वाले ग्रंथ (वे भी जहाँ तक वेदानुकूल हैं-सं.) (दर्शन, उपनिषद्, अरण्यक, वेदांग, रामायण, मनुस्मृति, महाभारत, कौटिल्य अर्थशास्त्र) आदि ही प्रमाणिक हैं ।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे?

- आर्य समाज ये नहीं मानता कि, शिवलिंग पर दूध चढ़ाने से, मूर्ति के आगे माथा टेकने से, धूप अगरबत्ती करने से,

मूर्ति को भोग लगाने से, कपड़े पहनाने से, ढोल बाजे बजाने से, और नाचने आदि अंधविश्वास से ईश्वर की भक्ति होती है ।

बल्कि ये मानता है कि पतंजलि ऋषि के योगशास्त्र की उपासना विधि (यम-नियम पालन, प्राणायाम, प्रणवजप, ध्यान आदि) से ही निराकार सर्वव्यापक परमेश्वर की उपासना होती है, इसी विधि से हमारे पूर्वज ऋषि, मुनि, दुर्गा, राम, कृष्ण, सीता, सावित्री, शिव, हनुमान आदि उपासना किया करते थे ।अतः हमें भी ऐसे ही करनी चाहिए।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

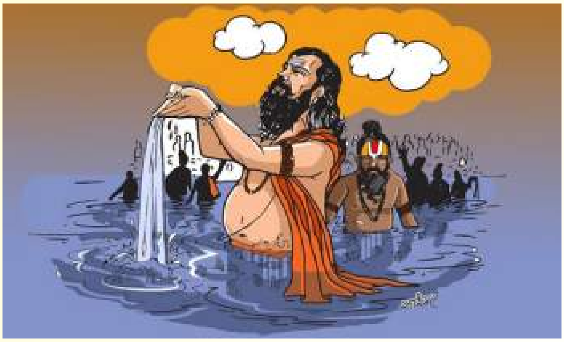

- आर्य समाज ये नहीं मानता कि, तीर्थ यात्राएँ करने से, गंगा स्नान से, पंडे पुजारियों को दान देने से, व्यर्थ के पाखंड करके धन, समय, ऊर्जा, आदि व्यर्थ करने से मनोकामना पूरी होती है ।

बल्कि ये मानता है कि, ऋषि परम्परा के अनुसार घर में हवन (अग्निहोत्र) करने से ३३ कोटि देव {११ रुद्र, ८ वसु, १२ आदित्य, मास, इन्द्र (विद्युत और प्रजापति)} की पुष्टि होती है, जिससे कि वृष्टि आदि समय पर होकर औषधियों का पोषण होता है, फल फूल शाक सब्जी अन्न आदि की वृद्धि और शुद्धता होती है, यज्ञ करने से हजारों मनुष्यों का उपकार होता है जैसा कि गीता में भी कहा है।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्य समाज ये नहीं मानता कि, मृतक का श्राद्ध करने से, पंडों का पेट भरने से, अस्थियाँ गंगा में बहाने आदि से मृतक की आत्मा को शान्ति मिलती है।

बल्कि ये मानता है कि, व्यक्ति अपने किये कर्मों का स्वयं उत्तरदायी है, शव का दाह संस्कार (नरमेध यज्ञ) करने के बाद घर में वायु शुद्धि हेतु हवन करवाना चाहिये, उसके बाद मृतक की अस्थियों को जल में डालने के बजाए किसी खेत में खाद के रूप में प्रयोग करना चाहिये, इसके बाद मृतक के लिये शेष कुछ भी न करना चाहिए ।

तो ऐसा मानने से आर्यसमाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्यसमाज ये नहीं चाहता कि, करोड़ों, अरबों, खरबों का धन मंदिरों में दान देकर उसे व्यर्थ किया जाये और न ही ये चाहता है कि उस धन का ७० प्रतिशत भाग मस्जिदों और चर्चों पर खर्च हो ।

बल्कि ये चाहता है कि, इसी अपार धन से हम वैदिक गुरुकुल, संस्कृत पाठशालाएँ, वैदिक विज्ञान पर शोध हेतु प्रयोगशालाएँ खोलें। जिससे कि हमारा देश शीघ्रता से संस्कृत राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर हो और वही वैदिक आर्यावर्त देश बने, अनाथाश्रम आदि खोले जायें, जिससे कि हिंदू बच्चे मदरसों और कानवेंट आदि में न जाकर विधर्मी होने से बचें।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्य समाज ये नहीं चाहता कि, खोखले लोकतंत्र के आधार पर राजनैतिक पार्टियाँ हिंदूओं को जाति में तोड़कर वोट लेती रहें और समुदाय विशेष का पोषण करती रहें और बेचारे हिंदू केवल झंडा उठाकर हिंदूराष्ट्र का स्वप्न मात्र ही देखता रहे और ये स्वार्थी नेता हिंदुओं को बरगलाकर वोट लेते रहें और शोषण करते रहें।

बल्कि ये चाहता है कि लोकतंत्र जैसे भ्रष्टतंत्र को उखाड़कर मनुस्मृति के आधार पर राजतंत्र स्थापित किया जाये और वैदिक शासन स्थापित किया जा सके, ताकि हमारा राजा पूरी पृथ्वी को एक छत्र वैदिक गणराज्य में लाकर युधिष्ठिर, विक्रमादित्य के समान वैदिक चक्रवर्ती राज्य स्थापित करे और राजसूय यज्ञ करे।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

- आर्य समाज स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण मठ की सेकुलर विचारधारा को नहीं मानता ।आर्य समाज नहीं मानता कि, माँस खाने वाले और दूसरों को माँस खाने का सुझाव देने वाले भारतीय संस्कृति के उपासक हो सकते हैं।

बल्कि आर्यसमाज मानता है कि, वेद के आधार पर ब्रह्मचर्य, शाकाहार आदि का पालन और प्रचार करने वाले दयानंद जी ने ही हिंदू समाज का उद्धार किया। गौरक्षा हेतु आंदोलन किया, स्त्री शिक्षा आरंभ करवाई, धर्म परिवर्तन को रोक उलटा शुद्धि चक्र चलाया, स्वतंत्रता हेतु युवा तैयार किए, कानवेंट शिक्षा समाप्त कर वैदिक गुरूकुल खोलने का प्रयास किया, मौलवीयों व पादरीयों से शास्त्रार्थ करके उनको धूल चटाई और हिंदुओं के मुर्दा शरीरों में गर्म रक्त का संचार किया ।

तो ऐसा मानने से आर्य समाज हिंदू विरोधी कैसे ?

प्रस्तुति - आर्यवीर दल जोधपुर

(उक्त आलेख हमने सोशल मीडिया से लिया है - सं.)

'हर-हर महादेव' के युद्धघोष के साथ देश में अटक से लेकर कटक तक केसरिया ध्वज लहरा कर 'हिन्दू स्वराज' लाने का जो सपना वीर छत्रपति शिवाजी महाराज ने देखा था, उसको काफी हद तक मराठा साम्राज्य के चौथे पेशवा या प्रधानमंत्री वीर बाजीराव प्रथम ने पूरा किया था। जिस वीर महायोद्धा बाजीराव पेशवा प्रथम के नाम से अंग्रेज शासक थर-थर कांपते थे, मुगल शासक बाजीराव से इतना डरते थे कि उनसे मिलने तक से भी घबराते थे। हिंदुस्तान के इतिहास में पेशवा बाजीराव प्रथम ही अकेले ऐसे महावीर महायोद्धा थे, जिन्होंने अपने जीवन काल में ४१ युद्ध लड़े और एक भी युद्ध नहीं हारा, साथ ही वीर महाराणा प्रताप और वीर छत्रपति शिवाजी के बाद बाजीराव पेशवा प्रथम का ही नाम

बाजीराव को इतिहास ने उनका तय सम्मान कभी नहीं दिया। उस समय जनता के बीच 'अपराजित हिन्दू सेनानी सम्राट' के नाम से प्रसिद्ध इस महान् सेनानायक पेशवा बाजीराव प्रथम की आज २८ अप्रैल को पुण्यतिथि है।

'बाजीराव पेशवा को लोग 'बाजीराव बल्लाल भट्ट' और 'थोरले बाजीराव' के नाम से भी जानते थे। छत्रपति शिवाजी के बाद वह गुरिल्ला युद्ध तकनीक के सबसे बड़े प्रतिपादक थे। उन्होंने अपने कुशल नेतृत्व, व्यूह रचना एवं कारगर रणकौशल के बलबूते पर मराठा साम्राज्य का देश में बहुत तेजी से सबसे अधिक विस्तार किया था।'

पेशवा बाजीराव बल्लाल का जन्म १८ अगस्त सन् १७०० को चितपावन कुल के ब्राह्मण परिवार में पिता बालाजी

बाजीराव पेशवा

पुण्यतिथि पर विशेष

आता है जिन्होंने मुगलों से बहुत लंबे समय तक लगातार लोहा लिया था। पेशवा बाजीराव बल्लाल भट्ट एक ऐसे महान् योद्धा थे, जिन्होंने निजाम, मोहम्मद बंगश से लेकर मुगलों, अंग्रेजों और पुर्तगालियों तक को युद्ध के मैदान में कई-कई बार करारी शिकस्त दी थी। बाजीराव पेशवा के समय में महाराष्ट्र, गुजरात, मालवा, बुंदेलखंड सहित ७० से ८० प्रतिशत भारत पर उनका शासन था। वह जब तक जीवित रहे हमेशा अजेय रहे, उनको कभी भी कोई हरा नहीं पाया।

हालांकि इस महावीर अजेय योद्धा के साथ हमारे देश के इतिहासकारों ने कभी न्याय नहीं किया, उन्होंने एक महान् योद्धा को हमेशा गुमनाम नायक बनकर ही रहने दिया,

विश्वनाथ और माता राधाबाई के घर में हुआ था। उनके पिताजी मराठा छत्रपति शाहूजी महाराज के प्रथम पेशवा (प्रधानमंत्री) थे।

बचपन से बाजीराव को घुड़सवारी करना, तीरंदाजी, तलवार, भाला, बनेठी, लाठी आदि चलाने का बहुत शौक था। १३-१४ वर्ष की खेलने की आयु में बाजीराव अपने पिताजी के साथ अभियानों पर घूमते थे। वह उनके साथ घूमते हुए राज दरबारी चालों, युद्ध नीति व रीति-रिवाजों को आत्मसात करते रहते थे। यह क्रम १९-२० वर्ष की आयु तक चलता रहा। अचानक एक दिन बाजीराव के पिता का निधन हो गया, तो वह मात्र बीस वर्ष की उम्र में छत्रपति

शाहूजी महाराज के पेशवा बन गये। पेशवा बाजीराव की लंबाई ६ फुट, हाथ लंबे, शरीर बलिष्ठ था। पूरी सेना को वो हमेशा बेहद सख्त अनुशासन में रखते थे। अपनी बेहतरीन भाषण शैली से वो सेना में एक नया जोश भर देते थे।

अल्पवयस्क उम्र के होते हुए भी बाजीराव ने असाधारण योग्यता प्रदर्शित की। पेशवा बनने के बाद अगले बीस वर्षों तक बाजीराव मराठा साम्राज्य को लगातार बहुत तेजी से बढ़ाते रहे। उनका व्यक्तित्व अत्यंत प्रभावशाली था। वह जन्मजात नेतृत्वशक्ति, अद्भुत रणकौशल, अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने अपने बेहद प्रतिभासंपन्न अनुज भाई चिमाजी अप्पा के सहयोग द्वारा शीघ्र ही मराठा साम्राज्य को भारत में सर्वशक्तिमान् बना दिया था। अपनी वीरता, अपने नेतृत्व क्षमता, गुरिल्ला युद्ध तकनीक व बेहतरीन युद्ध-कौशल योजना के द्वारा यह महान् वीर योद्धा बाजीराव जंग के मैदान में ४१ लड़ाई लड़ा और हर लड़ाई को जीतकर हमेशा अजेय विजेता रहा।

बाजीराव के समय में भारत की जनता मुगलों के साथ-साथ अंग्रेजों व पुर्तगालियों के अत्याचारों से त्रस्त हो चुकी थी। यह आक्रांता भारत के देवस्थान मंदिरों को तोड़ते, जबरन धर्म परिवर्तन करते, महिलाओं व बच्चों को मारते व उनका भयंकर शोषण करते थे। ऐसे में बाजीराव पेशवा ने उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक ऐसी विजय पताका फहराई कि चारों ओर उनके नाम का डंका बजने लगा। उनकी वीरता को देखकर लोग उन्हें शिवाजी का साक्षात अवतार मानने लगे थे।

बाजीराव का दिल्ली का अभियान-

उस वक्त देश में कोई भी ऐसी ताकत नहीं थी, जो सीधे दिल्ली पर आक्रमण करने का स्वप्न भी दिल में ला सके। मुगलों का और खासकर दिल्ली दरबार का ऐसा खौफ सबके सिर चढ़कर बोलता था। लेकिन बाजीराव को पता था कि ये खौफ तभी हटेगा जब दिल्ली पर खुद सीधा हमला होगा। बाजीराव ने उसी उद्देश्य से दिल्ली पर चढ़ाई कर दी। १० दिन की दूरी बाजीराव ने केवल ५०० घोड़ों के साथ ४८ घंटे में बिना रुके बिना थके पूरी कर ली। देश के इतिहास में अब तक २ राजाओं के आक्रमण ही सबसे तेज माने गए हैं- एक अकबर का फतेहपुर से गुजरात के विद्रोह को दबाने के लिए ६ दिन के अंदर वापस गुजरात जाकर हमला करना और दूसरा महान् योद्धा बाजीराव का दिल्ली की मुगल सल्तनत पर हमला करना। बाजीराव ने आज जहां तालकटोरा स्टेडियम है वहां पर अपनी सेना का कैंप डाल दिया, उसके

पास केवल ५०० घुड़सवार सैनिक योद्धा थे। मुगल बादशाह मोहम्मद शाह रंगीला बाजीराव को लाल किले के इतना करीब देखकर घबरा गया। उसने खुद को लाल किले के अंदर सुरक्षित इलाके में कैद कर लिया और मीर हसन कोका की अगुआई में १० हजार सैनिकों की टोली को बाजीराव से निपटने के लिए भेजा। बाजीराव के ५०० लड़ाकों ने उस सेना को २८ मार्च १७३७ के दिन बुरी तरह शिकस्त दी। यह दिन भारत के इतिहास का स्वर्णिम दिन था और मराठा ताकत के लिए सबसे बड़ा दिन।

-सन् १७३७ तक बाजीराव की सैन्यशक्ति का चरमोत्कर्ष था। उसी वर्ष भोपाल में बाजीराव पेशवा ने फिर से निजाम को पराजय दी। अंततः१७३८ में उन्होंने नासिरजंग पर विजय प्राप्त की थी।

अमेरिकी इतिहासकार बर्नार्ड मांटोगोमेरी के अनुसार

'बाजीराव पेशवा भारत के इतिहास का सबसे महानतम सेनापति था और पालखेड़ युद्ध में जिस तरीके से उन्होंने निजाम की विशाल सेनाओं को पराजित किया वह उस वक्त सिर्फ बाजीराव प्रथम ही कर सकते थे उसके अलावा भारत या भारतीय उपमहाद्वीप में यह सब करने की क्षमता किसी और में नहीं थी।'

बाजीराव प्रथम और उनके भाई चिमाजी अप्पा ने बेसिन के लोगों को पुर्तगालियों के अत्याचार से भी बचाया जो जबरन धर्म परिवर्तन करवा रहे थे और जबरन यूरोपीय सभ्यता को भारत में लाने की कोशिश कर रहे थे। सन् १७३८ में अंतिम दिनों में अपने भाई चिमाजी अप्पा को भेजकर उन्होंने पुर्तगालियों को हरा दिया और वसई की संधि करवा दी थी। बाजीराव ने सन् १७३० मे शनिवार वाड़ा का पुणे में निर्माण करवाया और पुणे को राजधानी बनाया। बाजीराव ने ही पहली बार देश में 'हिन्दू पदशाही' का सिद्धांत दिया और सभी हिंदुओं को एक कर विदेशी शक्तियों के खिलाफ लड़ने का बीड़ा उठाया, हालांकि उन्होंने कभी भी किसी अन्य धर्म

के मानने वाले लोगों पर कोई अत्याचार नहीं किया।

बाजीराव पेशवा की वीरता के बारे में इतिहास तथा राजनीति के एक विद्वान् सर रिचर्ड टेंपिल ने बाजीराव की महत्ता का यथार्थ अनुमान एक वाक्य समूह में किया है। वह लिखते है कि-

''सवार के रूप में बाजीराव को कोई भी मात नहीं दे सकता था। युद्ध में वह सदैव अग्रगामी रहता था। यदि कार्य दुस्साध्य होता तो वह सदैव अग्नि-वर्षा का सामना करने को उत्सुक रहता। वह कभी थकता न था। उसे अपने सिपाहियों के साथ दुःख-सुख उठाने में बड़ा आनंद आता था। विरोधी मुसलमानों और राजनीतिक क्षितिज पर नवोदित यूरोपीय सत्ताओं के विरुद्ध राष्ट्रीय उद्योगों में सफलता प्राप्त करने की प्रेरणा उसे हिंदुओं के विश्वास और श्रद्धा में सदैव मिलती रही। वह उस समय तक जीवित रहा जब तक अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक संपूर्ण भारतीय महाद्वीप पर मराठों का भय व्याप्त न हो गया। उसकी मृत्यु डेरे में हुई, जिसमें वह अपने सिपाहियों के साथ आजीवन रहा। महान् योद्धा युद्धकर्ता पेशवा के रूप में तथा हिंदू शक्ति के महान् अवतार के रूप में मराठे उसका हमेशा स्मरण करते रहेंगे।'

बाजीराव का २८ अप्रैल १७४० में केवल ४०वर्ष की उम्र में इस दुनिया से चले जाना मराठा शासकों के लिए ही नहीं, बल्कि देश की बाकी पीढ़ियों के लिए भी बहुत ही दर्दनाक भविष्य लेकर आया। उनकी मृत्यु के पश्चात् अगले २००वर्ष तक भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहा और उनके बाद देश में कोई भी ऐसा योद्धा नहीं हुआ, जो पूरे देश को एक सूत्र में बांधकर आजाद करवा पाता। जब भी भारत के इतिहास के महान् योद्धाओं की बात होगी तो निस्संदेह महान् पेशवा श्रीमंत बाजीराव प्रथम का नाम हमेशा गर्व से लिया जायेगा और वह हमेशा हम सभी भारतवासियों के आदर्श व प्रेरणास्रोत सदा बने रहेंगे। आज पुण्यतिथि पर हम सभी भारत के महावीर महान् योद्धा बाजीराव प्रथम को भावपूर्ण श्रदांजलि अर्पित करते हैं।

- दीपक कुमार त्यागी
स्वतंत्र पत्रकार, स्तंभकार व रचनाकार के स्तम्भ से
साभार प्रभा साक्षी

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी. एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ. मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री चेतन प्रकाश; जोधपुर,

समाचार

दयानन्द शिक्षा प्रसारिणी सोसायटी, उदयपुर के चुनाव सम्पन्न

भंवरलाल आर्य अध्यक्ष एवं कृष्ण कुमार सोनी मंत्री निर्वाचित

उदयपुर ६ मार्च,२२। आर्य समाज हिरण मगरी सभागार में सम्पन्न दयानन्द शिक्षा प्रसारिणी सोसायटी के चुनाव में श्री भंवर लाल आर्य अध्यक्ष एवं कृष्ण कुमार सोनी मंत्री निर्वाचित किए गये। निर्वाचन अधिकारी डॉ.गिरीश शर्मा के निर्देशन में सम्पन्न हुये चुनाव में श्री अम्बालाल सनाढ्य उपाध्याय, श्री संजय शांडिल्य उप मंत्री, श्रीमती ललिता मेहरा कोषाध्यक्ष पद पर निर्वाचित किये गये। डा. अमृत लाल तापडिया, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्री हजारी लाल आर्य ,श्रीमती सरला गुप्ता सदस्य चुने गए। - भवदीय, कृष्ण कुमार सोनी, मंत्री

आर्य वीर पं.लेख राम जी की जयंती

आज फाल्गुन शुक्ला तृतीया को आर्य वीर पं.लेख राम जी की जयंती आर्य समाज, अंजली विहार, बारां रोड, कोटा के सभागार में समारोह पूर्वक मनाई गई।

सर्व प्रथम वानप्रस्थी राजेन्द्र मुनि जी ने विशेष यज्ञ वैदिक मंत्रों से यजमान प्रधाना श्रीमती ऊषा आर्या से सम्पन्न कराया।

तत्पश्चात् बालिका अध्वरा आर्या ने भजन की मनोहारी प्रस्तुति दी। विशेष रूप से उपस्थित पूर्णिमा सत्संग समिति के संयोजक आदरणीय श्री राजेन्द्र सक्सेना जी ने पं.लेखराम जी के प्रेरणा दायक जीवन पर प्रकाश डाला। कैसे उस काल का डाकू मुगला उनके सत्संग से प्रभावित होकर एक नेक इंसान बन गया और पं.जी ने उसे जनेऊ पहनाकर सभी गलत मार्ग छोड़ने की प्रेरणा दी। और उनके एक गांव में उपस्थित होने पर पूरा गांव जो धर्मान्तरण कर मुसलमान होने जा रहा था,बच गया और हिन्दू धर्म ही शिरोधार्य किया। अन्त में मन्त्री श्री प्रांशु आर्य ने शान्तिपाठ व जयघोष करवा सभा का समापन किया।

- प्रांशु आर्य, मन्त्री, आर्य समाज,अन्जली विहार, कोटा

आर्य समाज हिरण मगरी में ऋषि बोधोत्सव एवं महाशिवरात्रि पर्व पर यज्ञ, भजन, काव्य पाठ एवं उद्‌बोधन

सत्य को धारण करना ही सच्ची श्रद्धा हैं - अशोक आर्य

आर्य समाज हिरण मगरी सेक्टर ४ में ऋषि बोधोत्सव (महाशिवरात्रि) पर्व के पावन अवसर पर इन्द्र प्रकाश के पौरोहित्य में विमला तापड़िया, प्राची मूंदड़ा, डा. अमृत लाल तापड़िया, राधा त्रिवेदी, देवराज सिंह, चंद्रकांता आर्या, मुकेश पाठक आदि ने यज्ञ के मुख्य यजमान के पद को सुशोभित किया। योग साधक जिग्नेश शर्मा ने बताया कि यज्ञोपरान्त सरला गुप्ता, कृष्ण कुमार सोनी, राधा त्रिवेदी, भवानी दास आर्य आदि ने महर्षि दयानंद सरस्वती जी पर सुमधुर भजन एवं काव्य पाठ प्रस्तुत किया।

वैदिक विद्वान् एवं श्रीमद दयानंद सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष अशोक आर्य ने महर्षि दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वैदिक मंत्रों से साथ सारगर्भित उद्‌बोधन प्रस्तुत करते हुए बताया कि सत्य को धारण करना ही सच्ची श्रद्धा है। तर्क बुद्धि से सत्य-असत्य की पहचान करना चाहिए। यदि सत्य को ही जीवन में उतारते हैं तो ये सम्पूर्ण जगत् स्वर्ग बन जाएगा और यही सच्चे अर्थों में ऋषि दयानन्द की सच्ची आराधना होगी।

कार्यक्रम संचालन मंत्री संजय शांडिल्य ने किया। स्वागत ललिता मेहरा ने किया। आभार एवं धन्यवाद डा. अमृत लाल तापड़िया ने किया। शांति पाठ भंवर लाल आर्य ने किया।

- भवदीय, जिग्नेश शर्मा, आर्य समाज हिरण मगरी, चलभाष ९९८२०९४९७९

महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती की जयंती मनाई गई

आबूरोड' २६ फरवरी। शहर के दयानंद पैराडाइज विद्यालय में महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती की जयंती पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत वैदिक यज्ञ द्वारा की गई। स्वामी दयानंद हाउस के छात्रों द्वारा भजन की प्रस्तुति दी गई। इसी हाउस के कक्षा ८ के छात्र जसपाल सिंह द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती का अभिनय किया गया तथा अनमोल वचनों से सभी के सामने शिक्षाप्रद विचार व्यक्त किए। कक्षा सातवीं की छात्रा दीक्षा सैनी के द्वारा अंग्रेजी भाषण दिया गया। कविता की प्रस्तुति कक्षा चौथी की छात्रा ईशिका त्रिपाठी द्वारा दी गई। महर्षि दयानंद सरस्वती के बारे में हिंदी भाषण छात्र मोहित चारण द्वारा दिया गया। इसके बाद कक्षा पांचवी के छात्र देवकरण ने महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन से संबंधित प्रेरणादायी कहानी प्रस्तुत की। कार्यक्रम, महर्षि दयानंद सरस्वती के जीवन काल से संबंधित प्रश्नोत्तरी के साथ आगे बढ़ा। कार्यक्रम के अंत में प्रधानाचार्य प्रवीण आर्य द्वारा सभी छात्र-छात्राओं को महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती के जीवनकाल से संबंधित विभिन्न प्रेरणादायी बातों से अवगत कराया और बताया कि स्वामी दयानंद जी ने समाज में प्रचलित कई सामाजिक बुराइयों का जोरदार विरोध किया और उनका शिक्षा, विशेष तौर पर कन्या शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानंद से प्रेरणा लेते हुए डीएवी और गुरुकुल के माध्यम से आर्य समाज अभी भी शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। समाज में मानवता का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां स्वामी दयानंद ने चेतना का काम नहीं किया हो। उन्होंने कहा कि हम महर्षि दयानंद के मिशन को आगे बढ़ाकर एक मजबूत समाज व राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकते हैं। अंत में शुभकामनाओं के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

कानून का शासन सभी चाहते हैं

उत्तर प्रदेश के चुनावों में कानपुर की बिल्हौर विधानसभा सीट पर इस बार सब की नजर थी,क्योंकि इसी विधानसभा के अंतर्गत बिकरू गांव आता है जहां पर दबंग विकास दुबे ने पुलिस बल पर फायरिंग करके ८ पुलिस वालों को मार दिया था और बाद में उत्तर प्रदेश पुलिस ने एनकाउंटर में विकास दुबे की टिकट काट दी थी।

इसको लेकर के चुनावों में बहुत बड़ी अफवाह फैलाई गई कि ब्राह्मण इस कारण से भाजपा से नाराज है। अतरू यह एक देखने वाली बात बन गई कि क्या कानून को तोड़ने वाले ८ पुलिसवालों की हत्या करने वाले विकास दुबे का एनकाउंटर एक जाति को इतना नाराज कर सकता है कि वह शासक दल को चुनावों में हरा दे। यदि ऐसा होता है तो आगे आने वाली पार्टियां क्यों कानून के लिए दबंगों को उनका सही स्थान दिखाएंगे ? मतों की खातिर वे अपने कर्तव्य से विमुख रहेंगी। परंतु बिल्हौर से भाजपा प्रत्याशी की अच्छे मतों से जीत ने यह साबित किया और उत्तर प्रदेश के चुनाव में ब्राह्मणों ने जिस प्रकार गत चुनावों से भी ज्यादा वोट भाजपा को दिया उससे यह प्रमाणित हुआ कि कानून का शासन सभी चाहते हैं । अतः किसी भी शासन व्यवस्था को गुंडे दबंगों मवालियों को उनका सही स्थान दिखाने से परहेज नहीं करना चाहिए। एक आश्चर्यजनक दृश्य दिख रहा है कि अभी उत्तर प्रदेश में सरकार का गठन भी नहीं हुआ है और विभिन्न थानों में गुंडे अपने गले में तख्ती लटकाए आत्म समर्पण कर रहे हैं। कानून का यही भाई गुंडों में होना चाहिए।

वासंती नवसस्येष्ठि यज्ञ बड़ी धूमधाम से मनाया गया

आर्य समाज हिरण मगरी उदयपुर में वासंती नवसस्येष्ठि यज्ञ बड़ी धूमधाम से आयोजित किया गया। आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री के ब्रह्मत्व में

पञ्चकुंडीय यज्ञ संपन्न हुआ, जिसमें प्रत्येक वेदी पर चार यजमान दंपति विराजे थे। यज्ञोपरांत डा. अमृतलाल तापड़िया ने होली क्या-क्यों और कैसे इस विषय पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर दयानंद कन्या विद्यालय की विपन्न छात्राओं को प्रतिवर्ष अपने दान से सहयोग प्रदान करने वाले अमेरिका निवासी श्री गौरव गुप्ता और श्रीमती पेत्रा गुप्ता और उनके बच्चों का अभिनंदन किया गया। साथ ही आईआईएम उदयपुर में प्रोफेसर डा. सौरभ गुप्ता और उनकी श्रीमती जी का भी स्वागत किया और उनके नियमित अर्थ सहयोग को सराहते हुए उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर श्री संजय शांडिल्य ने नगर निगम उदयपुर के महापौर श्री टांक साहब एवं श्री ताराचंद जैन अध्यक्ष निर्माण समिति एवं श्रीमती विद्या भावसार पार्षद हिरणमगरी क्षेत्र का भी उनके निरंतर सहयोग हेतु एवं आर्य समाज के आगे इंटरलाक टाइल्स लगवाने हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया। शांति पाठ और जयघोष के उपरांत कार्यक्रम का समापन हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ११/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ११/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतनलाल राजौरा, निम्बाहेड़ा,(राज.), श्री पुरुषत्तमलाल मेघवाल, उदयपुर, (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी,बीकानेर,(राज.), रूपादेवी सोनी, बीकानेर, (राज.), श्री प्रधान जी, आर्य समाज, बीकानेर, (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी, बीकानेर, (राज.), श्रीमहेश चन्द्र सोनी, बीकानेर, (राज.), श्री हर्षवर्द्धन आर्य, नेमदारगंज,(बिहार) श्रीमती कंचन देवी, बीकानेर, (राज.), श्री इन्द्रजीत देव, यमुनानगर, श्री फूलचन्द यादव, गाजियाबाद,(उत्तरप्रदेश), डॉ.राजबाला, कादियान, करनाल, हरियाणा, आर.सी.आर्य,कोटा, (राज.), श्री हीरालाल बलाई, उदयपुर, (राज.), श्री गोपाल लाल राव, चित्तौड़गढ़,(राज.)

सत्यार्थ सौरभ के उपरोक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 20 पर अवश्य पढ़ें।

सत्यार्थ-पीयूष

वेद ज्ञान की आवश्यकता

यहाँ हम अवश्य कहना चाहेंगे कि भारतीय परम्परा में भी गोमेध, नरमेध, अश्वमेध आदि के नाम पर, मन्त्रों का सही आशय न समझ पाने के कारण पशुबलि की जो क्रूरतम अमानवीय प्रथा चली वह अतीव गर्हित थी, अवैदिक थी। यह कहना कि इस हिंसक एवं बर्बर कार्य का आधार वेद का आदेश है, यह ठीक नहीं क्योंकि वेद में ऐसे निन्दनीय कृत्य के समर्थन का संकेत भी नहीं है। हम एक ही उदाहरण देते हैं। यजुर्वेद के २२वें एवं २५वें अध्याय तक अश्वमेध यज्ञ का वर्णन है। अनेक भाष्यकारों ने यहाँ अश्व को मारकाट कर होम करने का वीभत्स वर्णन किया है। ऐसे अर्थ उन भाष्यकारों द्वारा किये गये अनर्थ थे।

परन्तु महर्षिवर दयानन्द इसका सही अर्थ करते हुए बताते हैं कि 'राष्ट्र का पालन करना ही क्षत्रियों का अश्वमेध है क्योंकि शतपथ ब्राह्मण में भी कहा है-

राष्ट्रं वा अश्वमेधः। (श. १३/१/६/३)

ईश्वर न्यायकारी है- वेद में ईश्वर को पूर्ण न्यायकारी माना है। जो अन्यायी है वह ईश्वर हो ही नहीं सकता। इसी पुस्तक में, पूर्व में, ईश्वर के इस अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वभाव की चर्चा हो चुकी है। अथर्व. १२/३/४७ में कहा है कि प्रभु ऐसा न्यायकारी है कि वहाँ कोई सिफारिश, प्रभोलन भी नहीं चलता। परन्तु बाईबल तथा कुरान वर्णित ईश्वर ऐसा प्रतीत नहीं होता। पाठकगण कतिपय उदाहरण देखें-

बाइबल- और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी रात को मिश्र के देश में सारे पहिलौठे......पशुन के पहिलौठों समेत नाश किए। - तौ.या प. १२/आ.२१

पाठक विचार करें। एक देश विशेष में ऐसा कत्ले आम ईश्वर द्वारा किया जाना अन्याय नहीं तो और क्या है?

कुरान-

(अ) और अल्लाह खास करता है जिसको चाहता है साथ दया अपनी के।। - म.१/सि.१/सू.२/आ.१०६

(ब) खुदा जिसको चाहे अनन्त रिजक देवे।। - म.१/सि.२/सू.२/आ.२०२

(स) 'वह कि जिसको चाहेगा क्षमा करेगा जिसको चाहे दण्ड देगा, क्योंकि वह सब वस्तु पर बलवान् है। - म.१/सि.३/सू.२/आ.२६६

ईश्वर न्यायकारी है वह जीवों को उनके कर्मों के अनुसार ही यथावत् फल प्रदान करता है न कि स्वेच्छा से क्योंकि वह स्वेच्छाचारी नहीं हो सकता। पर उपरोक्त सभी उदाहरणों में कुरान का ईश्वर जीवों को कर्मों के आधार पर नहीं अपनी इच्छा से, अपनी चाहत के अनुसार फल देता है जो ईश्वर के गुण-कर्म स्वभावानुसार नहीं है।

यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि हिन्दुओं में भी नाना प्रकार के ऐसे उपाय आविष्कृत कर लिए गए हैं जिनके बारे में दावा किया जाता है कि वैसा करने से ईश्वर द्वारा पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। यह सभी अवैदिक हैं। ईश्वर ऐसा कभी नहीं करता।

(३) ईश्वर के ईर्ष्यालु, छली, कपटी धोखा देने वाला होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। परन्तु कुरान के ईश्वर के सन्दर्भ में निम्न उदाहरण देखें।

(अ) '......काफिरों ने धोखा दिया, ईश्वर ने धोखा दिया, ईश्वर बहुत मकर करने वाला है। - म. १/सि.३/सू. ३/आ. ४६

(ब) निश्चय वे मकर करते हैं एक मकर।। और मैं भी मकर करता हूँ एक मकर।। - मं.७/सि.३०/सू.७६/आ.१५/१६

(४) ईश्वरीय ज्ञान सृष्टिक्रम से विरुद्ध नहीं हो सकता-

सृष्टि के नियमों का निर्माता ईश्वर है वह स्वयं भी स्वस्थापित नियमों को नहीं तोड़ता। जिस ग्रन्थ में सृष्टिक्रम से विरुद्ध बातें हैं वह ईश्वरीय ज्ञान कदापि नहीं हो सकता।

वेद में एक भी स्थल ऐसा नहीं है। परन्तु बायबल व कुरान के निम्न उदाहरण देखें। बायबल-

(अ) '......और अपने वचन के समान परमेश्वर ने सरः के विषय में किया। और सरः गर्भिणी हुई।। - तौ. उत्प.पर्व २१/आ. १/२

आदि सृष्टि के पश्चात् सन्तानोत्पत्ति नर-मादा के संयोग से होती है। इस नियम के विपरीत उक्त कार्य में परमेश्वर को सम्मिलित कराना सृष्टिक्रम के नियमों के विरुद्ध होने के साथ ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव के भी विपरीत है। इसी प्रकार कुमारी मरियम से पुत्रोत्पत्ति की कथा है। कुरान में भी मरियम के सन्दर्भ में ऐसी ही स्थापना है। देखें-

'और याद करो बीच किताब के मर्यम को.......बस भेजा हमने रुह अपनी को.....बस गर्भित हो गयी साथ उसके...।। - म.४/सि.१६/सू.१९/आ. ८/१६-१९/२१

(ब) मूसा के हाथ की छड़ी को ईश्वर ने सर्प बना दिया। पुनः छड़ी बना दिया। उसके हाथ को कोढ़ी बना दिया। पुनः चंगा कर दिया। आदि । (तौ.या.प.४/आ.२-४/६/७/१ का भावार्थ मात्र)

ऐसे बाजीगरी के खेल दिखाना ईश्वर का कार्य नहीं है। जड़ कभी चेतन नहीं हो सकता अतः छड़ी भी सर्प नहीं बन सकती।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

HOT HAI BOSS
Dollar
ULTRA
THERMALS

इसलिये जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उस के उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना। अब भी पालन होता है। आगे होगा। उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

- सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास पृष्ठ ३८०

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर